सप्तगिरि

सितंबर १९७९

कंचि वरद का सन्मान

१०-८-७९

कंचि पुण्य क्षेत्र में विराजमान श्री वरदराज स्वामी जी की मूलमूर्ति बहुत पहले अत्ति पेड से बनायी गयी। मंदिर में नये मूल विराट् मूर्ति की प्रतिष्ठा करके, इसे "अनंत सरस्सु" नामक पुष्करिणि के बीच में एक प्रदेश में जलांतर्गत करके, हर ४२ वर्ष को एक बार भक्तजनादि के दर्शन के लिए भूमि पर लाकर पूजादि कार्यक्रम का निर्वहण कर रहे हैं।
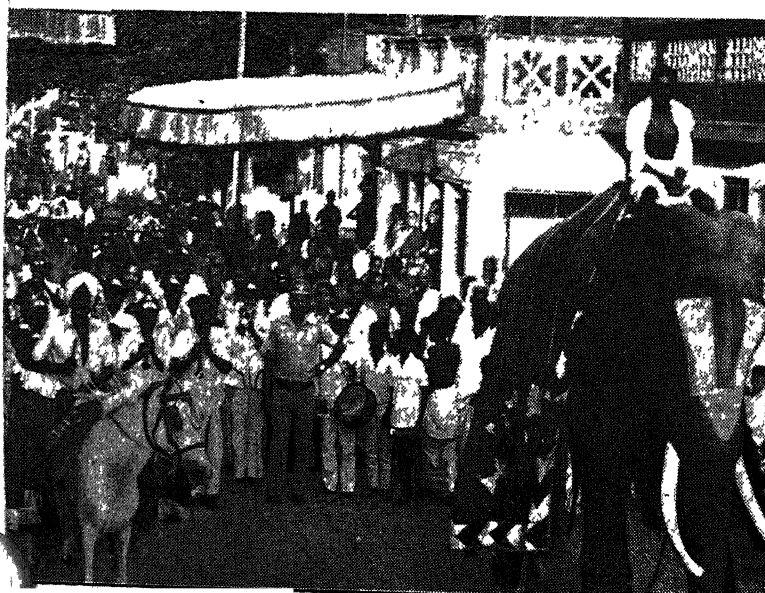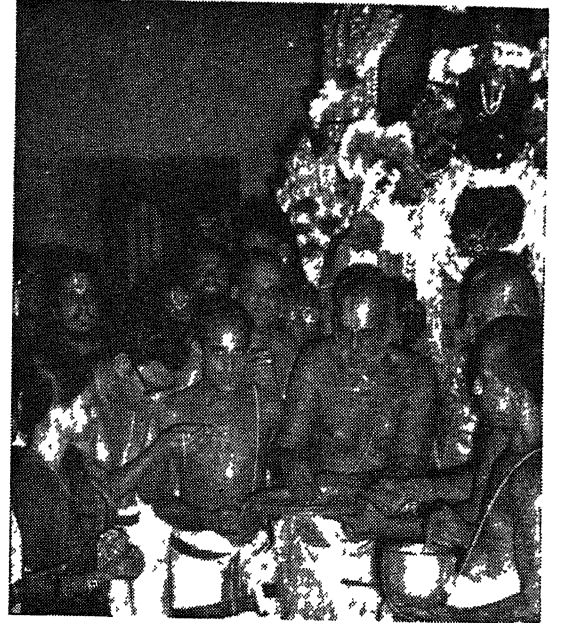
लगभग ४० साल के बाद हाल ही में बाहर लाये गये श्री अत्ति वरद राज स्वामीजी को १२ फुट शाल को समर्पित करने के लिए ति. ति. देवस्थान ने निर्णय किया। तदनुसार रु. १५००/- कीमत वाली मेल्चत, रु. १५००/- कीमत वाली १२ पुट ओढनी (उत्तरीय) इस के अलावा १८ फुट जरी रेशमी की वस्त्र को देवस्थान के कार्य निर्वहणाधिकारी श्री पी. वी. आर. के. प्रसादजी के आध्वर्य में श्री बालाजी को, तिरुचानूर में पद्मावती देवी को धारण करके, बाद में जूलूस के साथ निकलकर १०-८-७९ के शाम को पांच बजे

(तीसरे कवर पष्ठ पर देखिए)

नाना दिक्कुल नरुलेल्ल
वानललोनने वत्तुरु कदलि ॥ टेका ॥

सतुल सुतुल परिसरुल बाधवुल
हितुल गोलवगा निंदरुनु
शतसहस्त्रयोजन वासुल सु
व्रतमुलतोडने वत्तुरु गदलि ॥ नाना ॥

मुडुपुल जोलेलु मोगिदल मूटलु
कडलेनि धनमु गातलुनु
कडुमंचि मणुलु करुल दुरगमुल
वडिगोनि चेलगुचु वत्तुरु गदलि ॥ नाना ॥

मगुट वर्द्धनुलु मण्डलेश्वरुलु
जगदेक पतुलु, जतुरुलनु
तगु वेंकटपति दरुशिंपग बहु
वगल संपदल वत्तुरु गदलि ॥ नाना ॥

अध्यात्म संकीर्तनलु — श्री अन्नमाचार्य
संपुटि – २२. संकीर्तनलु सं. ३४५

(तेलुगु साहित्य के पदकविता पितामह श्री अन्नमय्या भगवान बालाजी के अनन्य भक्त हैं। ब्रह्मोत्सव के शुभ अवसर पर उनके द्वारा वर्णित एक संकीर्तना को हम प्रस्तुत कर रहे है।)

श्री अन्नमय्या जी कहते है कि ब्रह्मोत्सव के अवसर पर भगवान के दर्शन के लिए सभी दिशाओ से मानव, बरसात को भी बिना परवाह करके चले आते हैं।

पत्नी संतान, आस-पास के लोग, रिश्तेदार तथा हितैषी जन के साथ कई हजार मीलो से भी नियम निष्ठानुसार स्वामीजी को प्रार्थना करने के लिए चले आते हैं।

स्वामीजी की मनौतियाँ चुकाने, अत्यंत धन, मणि रत्न, हाथी, घोडे आदि को अपने साथ लेकर अधिक सतोष युक्त अपने स्वामीजी के दर्शन के लिए चले आते हैं।

सम्राट, मंडलाधिपति, शासक, बुद्धिमान लोग अत्यत संपत्ति को लेकर वेंकटापति श्री बालाजी के दर्शन करने चले आते हैं।

श्रीवेङ्कटेश्वरस्वामीजी का मन्दिर, तिरुमल.

१–३–७९ से

दैनिक पूजा एवं दर्शन का कार्यक्रम

शनि, रवि, सोम तथा मंगलवार

प्रात	3–00	से	3–30	तक	सुप्रभात
,,	3–30	,	3–45	,,	शुद्धि
.	3–45	,,	4–30	,	तोमालसेवा
,	4–30	,,	4–45	,,	कोलुवु तथा पचागश्रवण
,,	4–45	,	5–30	,,	पहली अर्चना
,,	5–30	,,	6–00	,	पहलीघटी तथा सात्तुमोरै
,,	6–00	,	12–00	,,	**सर्वदर्शन**
दोपहर	12–00	,,	–00	,,	दूसरी अर्चना
,,	1–00	,,	8–00	,,	**सर्वदर्शन**
रात	8–00	,,	9–00	,,	शुद्धि तथा रात का कैकर्य
,,	9–00	,,	12–00	,,	**सर्वदर्शन**
,,	12–00	,,	12–30	,,	शुद्धि
,,			12–30		एकान्त सेवा

बुधवार (सहस्र कलशाभिषेक)

प्रात	3–00	से	3–30	तक	सुप्रभात
,,	3–30	,,	3–45	,,	शुद्धि
,,	3–45	,,	4–30	,,	तोमाल सेवा
,,	4–30	,,	4–45	,,	कोलुवु तथा पचाग श्रवण
,,	4–45	,,	5–30	,,	पहली अर्चना
,,	5–30	,,	6–00	,,	पहलीघटी तथा सात्तुमोरै
,,	6–00	,,	8–00	,,	सहस्र कलशाभिषेक
,,	8–00	रात	8–00	,,	**सर्वदर्शन**
रात	8–00	,,	9–00	,,	**शुद्धि**
,,	9–00	,,	12–00	,,	**सर्वदर्शन**
,,	12–00	,,	12–30	,,	**शुद्धि**
,,		,,	12–30	,,	एकात सेवा

गुरुवार (तिरुप्पावडा)

प्रातः	3–00	**से**	3–30	तक	सुप्रभात
,,	3–30	,,	3–45	,,	शुद्धि
प्रात	3–45	से	4–30	तक	तोमाल सेवा
,,	4–30	,,	4–45	,,	कोलुवु, तथा पंचागश्रवण
,	4–45	,,	5–30	,,	पहली अर्चना
,,	5–30	,,	6–00	,,	पहली घटी, बाली तथा सात्तुमारै
,	6–00	,,	8–00	,,	सर्डलिपु, दूसरी अर्चना तिरुप्पावडा, अलकरण घटी इत्यादि
,,	8–00	रात	8–00	,,	**सर्वदर्शन**
	8–00	,,	10–00	,,	शुद्धि इत्यादि पूलगि समर्पण रात का कैकर्य, घटी
,,	10–00	,,	12–00	,,	पूलगि सेवा (अर्जित)
,,	12–00	,,	12–30	,,	**शुद्धि**
,,		,,	12–30	,,	एकात सेवा

शुक्रवार (अभिषेक)

प्रात	3–00	से	3–30	तक	सुप्रभात
,,	3–30	,,	5–00	,,	सर्डलिपु का नित्य कैकर्य (एकात)
,,	5–00	,,	7–00	,,	अभिषेक (अर्जित)
,,	7–00	,,	8–30	,,	समर्पण
,,	8–30	,,	9–30	,	तोमाल सेवा अर्चना, घटी बालि तथा सात्तुमोरै
,,	9–30	,,	10–00	,,	दूसरी घटी, सात्तुमोरै
,,	10–00	रात	8–00	,,	**सर्वदर्शन**
रात	8–00	,,	9–00	,,	शुद्धि, रात का कैकर्य
,,	9–00	,	12–00	,,	**सर्वदर्शन**
,,	12–00	,,	12–30	,,	**शुद्धि**
,,		,,	12–30	,,	एकात सेवा

सूचना . १. उक्त कार्यक्रम किसी त्योहार तथा विशेष उत्सव दिनो के अवसर पर समयानुकूल बदल दिया जायगा । २. सुप्रभात दर्शन केलिए सिर्फ रु २५/– टिकेटवालो को ही अनुमति मिलेगी । ३. रु २५/– के टिकेट तिरुमल मे तथा आन्ध्रा बैंक के सभी शाखाओ में मिलेगी । ४. सेवानंतर टिकेट को रद्द कर दिया गया । ५. प्रत्येक दर्शन के टिकेटवालो को पहले के जैसे ध्वजस्थभ के पास से नही, बल्कि महाद्वार से क्यू मे मिलाया जायगा । ६. रु २००/– के अमत्रणोत्सव टिकेट पर दो ही व्यक्तियो को भेजा जायगा । ७. अर्चना, तोमाल सेवा, एकातसेवा में दर्शनानंतर टिकेट या रु. २५/– का टिकेट नही बेचा जायेगा ।

—पेष्कार, श्री बालाजी का मदिर, तिरुमल.

वार्षिक चंदा .... रु. ६-००

एक प्रति .... रु. ०-५०

गौरव संपादक

श्री पी. वी आर. के. प्रसाद

आइ. ए. यस्,

कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति ति दे तिरुपति

दूरवाणी २३२२

संपादक, प्रकाशक

क. सुब्बाराव, एम. ए,

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति

दूरवाणी २२५४.

मुद्रक

एम्. विजयकुमाररेड्डी,

मेनेजर, टी टी. डी. प्रेस्, तिरुपति

दूरवाणी २३४०.

अन्य विवरण के लिये

EDITOR

'Sapthagiri'

T T D Press Compound,

TIRUPATI-517501

TIRUMALA TIRUPATI DEVASTHANAMS

सप्तगिरि

सितंबर १९७९

अंक

वर्ष

विषय-सूची

मुखचित्र : ब्रह्मोत्सव के अवसर पर भगवान श्री बालाजी, तिरुमल

मानव सघ जीवी है। मानव को सच्चे रास्ते पर ले जानेवाला साधन धर्म ही है। मानव के अच्छे या बुरे कर्मो का प्रभाव समाज पर अवश्य पडता है। अतएव धर्महीन समाज अथवा समाज हीन धर्म मानव को परिपूर्णता नहीं दे सकता है। इस कारण से ही हमारे पूर्वजों ने धार्मिक व्यवस्था की नींव डाली। उस समय उनकी दृष्टि में धार्मिक भेद-भाव थोडी ही था। उस समय वे मानवता को अधिक मूल्य देते थे। इसलिए उन्होंने तत्व चिंतन के साथ आध्यात्मिक स्फूर्ति तथा सामाजिक सक्षेम को जोडकर सामाजिक सम्मेलनों के द्वारा अनंत जीव तत्वाराधना के लिए रास्ता दिखाया। इस विषय के प्रत्यक्ष प्रमाण है "गोदावरी नदी के पवित्र पुष्कर"।

असल में नदियों और पुष्करों का सम्बन्ध क्या है। समस्त प्राणियों के प्रणाधार देवगुरु बृहस्पति की एक-एक वर्ष में एक-एक राशि में रहकर. फिर वही छोडे हुए राशि को पहुँचने के लिए जो १२ साल की काल-अवधि लगती है, उसे पुष्कर कहते है। उसी प्रकार भगवान रवि जलदाता है। जब रवि तथा गुरु एक राशि में विराजमान होते हैं. उस महत्तर काल को पर्व दिनों के रूप में निर्णय किया गया। इसके साथ साथ देश के सौभाग्य पूर्ण १२ जीव नदियों को लेकर, प्रत्येक गुरु संचार राशि को अमुक नदी के पुष्कर के रूप में निर्णय किया गया। हम भारतीयों का विश्वास हैं कि पुष्कर के समय में नदी स्नान करने से पितृ देवताओं को तर्पण दे सकते है, जो मोक्षदायक है। इसके अलावा पारस्परिक एकता, सांस्कृतिक परिरक्षण आदि लाभ प्राप्त होते है। ऐसे विशाल दृष्टिकोण से प्रचलित प्रयोजनात्मक कार्यकलापों में भाग लेकर आर्ष धर्म के प्रचार व प्रसार करना हर एक धार्मिक सस्था का परम कर्तव्य है।

गौतम महर्षि को गोहत्या-पाप से बचाने के लिए आसमान से धरती पर उतर कर प्रवाहमान पवित्र मंदाकिनी नदी ही गोदावरी नदी है। महाराष्ट्र में नासिक के पास पैदा होकर आन्ध्रप्रदेश में पापि पहाडों को पारकर, बाद को सागर में विलीन होने वाली यह पवित्र नदी माँ कुल पाच राष्ट्रों को पुनीत बनाती है। अगस्त महीने के अंत में रवि और गुरु को सिंह राशि में रहने के कारण इस नदी का पुष्करोत्सव सम्पन्न होता है। कोव्वूर से कोटिलिंगम् तक पूरा प्रात यात्रियों का नगर बन जाता है।

ति. ति. देवस्थान आस्तिक जनाराधना के लिए इस सदवकाश का सदुपयोग कर रहा है। शाश्वत रूप से देवस्थान के नाम पर राजमहेंद्रवरम् में एक स्नान घाट का प्रबंध किया है।

सुब्रह्मण्य मैदान में अधिक व्यय से निर्मित रमणीय कलात्मक भगवान बालाजी मूर्ति, सचमुच ही तिरुमल नही पहुँच सकनेवाले आस्तिक भक्त जनों केलिए चिंतामणि है। यहाँ पर निर्मित मंदिर में प्रातःकाल से लेकर देरी रात तक सम्पन्न होनेवाले भक्तिरस कार्यक्रम पाप पंकिल मानव मन को पुनीत करने में कोई संदेह नहीं है। धार्मिक ग्रंथ यहाँ पर सस्ते दाम में प्राप्त होते है। इस प्रकार आध्यात्मिक उन्नती में सेवा करने का सौभाग्य ति. ति. देवस्थान को प्राप्त हुआ है।

हमारी इन सेवाओं को देखकर हम गर्व कर सकते है, लेकिन वास्तव में इस प्रकार के पुण्य दिनों के निर्माता महापुरुष तथा मानव की मलिनता को अपने में लीन करके हमें पुनीत करनेवाली नदी माईयों के आगे हमें अपना सिर नवाना ही पडता हैं। यदि हम उनका एक प्रतिशत ही सही अनुकरण करें तो आध्यात्मिक पताका को फिर दशोंदिशाओं में फहरा सकते हैं।

सन्यासाश्रम - अजस्र शक्ति का स्त्रोत

डा. जी. बालसुब्रह्मण्यम

गीताकारने सन्यास की परिभाषा—

'काम्यानां कर्मणा न्यास सन्यासं कवयो विदुः' इन शब्दो में की है। काम्य कर्मों का त्याग करना सन्यास माना गया है। काम्य कर्मो के अंतर्गत वे ही कर्म आते है, जिन कर्मों में कामना से प्रेरित हो, मानव लग्न होता है।

कुछ लोगो का तर्क यह है कि कामना से बिना प्रचोदित, कर्म हो ही नहीं सकता। इसी सदर्भ में कृष्ण भगवान स्वय कहते है

"न हि देहभृता शक्य त्यक्तु कर्माव्यशेषतः" जो कोई भी देह धारी हो, कर्मों को अशेषतः छोड़ना उस से होता नहीं, इसलिये योगेश्वर कृष्ण जोर 'कर्म' के त्याग पर नहीं, 'कर्म-फल' के त्याग पर देते हैं :

'यस्तु कर्म फल त्यागी स त्यागी त्यभिधीयते'। गीताकार बार-बार यही आदेश देते हैं—'कर्म मत छोडो, इसलिये कि तुम नहीं छोड सकते हो' तो 'कर्म करना' ही गीतकार का मुख्य उपदेश है, किंतु एक विशेष बल के साथ'—

'योगस्थः कुरु कर्माणि'

'योगस्थ होकर काम करो! तब पाप-पुण्य का तुम अधिकारी नहीं बनोगो. तब यह प्रश्न आता है —'योग क्या है ?'

स्वयं गीताचार्य जवाब देते हैं :

"यस्मिन्स्थितो न दुःखेन गुरुणापि विचाल्यते, त विद्याद् दुःख सयोग वियोगं योग-संज्ञितम्"

'जो बडे से बडे दुःख से भी विचलित न होता हो, और दु ख के संयोग से दूर हुआ-सा अनुभव करता हो, उसे 'योगी' समझना चाहिये। दु.ख के संयोग से अलग होना ही योग समझा जाता है।

योग दर्शन के प्रणेता पतंजलि कहते हैं—

'हेयम् दुःख मनागतम्। जो दुःख अभी तक आया नहीं, उसे दूर करना ही है।

सन्यासी इस का ज्वलंत प्रमाण एवं निदर्शन है। वह योगी है, कर्म करने में दक्ष भी है। क्यो कि जो योगी नहीं है, वह सन्यासी भी नहीं बन सकता है। अगर बना भी हो तो वह 'फालतू' ही है। अत भगवान श्रीकृष्ण बताते हैं.—

'अयुक्तः कामकारेण फलेसक्तो निबध्यते' जो कोई भी अयुक्त होकर, काम करता हो, वह पुनः फलासक्ति से बध जाता है।

छठे अध्याय में पुन. गीताचार्य यह स्पष्ट कर देते है — 'योगी' और 'सन्यासी' दो भिन्न भिन्न नहीं है। जो 'योगी' नहीं बन सकता, वह 'सन्यासी' भी बन नहीं सकता।

"य सन्यासमिति प्राहुर्योगं त विद्धि पाडव न ह्यसंन्यस्त सकल्पो योगी भवति कश्चन" जो अपने संकल्पो को छोड सकता नहीं, वह योगी कभी नहीं बन सकता।

सन्यासी लोक-कल्याण केलिये अनवरत परिश्रम करनेवाला है, न कि, जैसाकि साधारणतया समझा जाता है, आलसी और परान्न जीवी लोक-कल्याण के अतिरिक्त उन का कोई कर्त्तव्य नहीं। वह 'अनिकेत' है, किंतु पूरे ससार को अपना 'निकेत' (वास-स्थान) मानता है। वह सांसरिक झंझटो से केवल दूर ही

श्री कोदंडरामस्वामीजी का मन्दिर, तिरुपति.

दैनिक — कार्यक्रम

———

प्रातः	5–00	से	5–30	तक	...	सुप्रभातम्
	5–30	से	8–00	तक	... .	सर्वदर्शन
	8–00	से	9–30	तक	. . . . .	आराधना, तोमालसेवा, सहस्रनामार्चना, पहली घटी
	9–30	से	11–00	तक	.. .. ..	सर्वदर्शनम्
	11–00	से	11–30	तक	... .. .	दूसरी घटी
	11–30	से	12–00	तक	. .. . .	सर्वदर्शन व तीर्मानम्
शाम को	5–00	से	6–00	तक	. .. ...	सर्वदर्शनम्
	6-00	से	7–00	तक	. .	रात का कैंकर्य, तोमाल सेवा, रात्रि की घटी आदि
	7–00	से	8–45	तक	... ...	सर्वदर्शन
	8–45	से	9–00	तक	... ...	एकातसेवा

सूचना .— शनिबार, पुनर्वसु नक्षत्र के दिन या अन्य विशेष उत्सवो के समय में उपरोक्त कार्यक्रमो में परिवर्तन होगा।

अर्जित सेवाओ की दरे :—

१) सहस्रनामार्चना प्रात 8–00 बजे से 9–00 बजे तक — रु. 2–00 हर एक व्यक्ति को
२) अष्टोत्तरम् (सर्वदर्शन के समय पर) — रु, 1–00
३) हारति („ „) — रु. 0–50
४) साप्ताहिक अभिषेकानतर दर्शन (सिर्फ शनिवार को) — रु. 1–00

नहीं, अपितु मुक्त भी है। इस का मतलब यह नहीं कि उसने उन झझटो से भयभीत होकर, सन्यास का सहारा लिया है। ऐसा कोई भी व्यक्ति, जो सासारिक यातनाओ से डरकर, घर-वार छोड, सन्यासी बन जाता है, वह सन्यासी नहीं। वह पवित्र सन्यासाश्रम केलिये घृणित व्यक्ति है।

सन्यासी चार प्रकार के माने जाते है— वैराग्य-सन्यासी, ज्ञान-सन्यासी, ज्ञान-वैराग्य सन्यासी और कर्म-सन्यासी वैराग्य-सन्यासी वीतरागी है। वैराग्य की अतिशयता के कारण जो सन्यासी बन जाता है, उसे वैराग्य सन्यासी कहते है। ज्ञानाधिक्य के कारण जिस के मन में प्रपच का बाद होता है, उसे ज्ञान-सन्यासी कहते है। ईषणात्रय व वासनात्रय से जो मुक्ति पा चुका हो, वही ज्ञान-सन्यासी है। ज्ञान-वैराग्य-सन्यासी वह है, जो शास्त्रों में निष्णात होने के बाद सब पदार्थो व द्रव्यो के पर्याप्त अनुभव के पश्चात् विरक्त होकर आप्त काम हो, आत्म-साधना में लीन दिगबर बन दुनिया में अकेला रमता है। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ तथा वानप्रस्थ आश्रमो के सम्यक् पालन के उपरांत सन्यासी जो बनता है, उसे कर्म-सन्यासी कहते है। ब्रह्मचर्याश्रम से सीधे जो दिगबर बनता है, उसे वैराग्य-सन्यासी कहते ह।

सन्यासियों में भिन्न प्रकार का वर्गीकरण भी प्रचलित है—कुटीचक, बहूदक, हस, परमहंस, तुरीयातीत, अवधूत कुटीचक शिखा, यज्ञोपवीत, दंड, कमंडलु, कौपीन, कंथा का धारण करते हुये भी माता, पिता, गुरु की सेवा में तत्पर रहता है। बहूदक कई घरो से रोटी मागते हुए मधुकर वृत्ति से जीता है, अन्य मामलो में कुटीचक के समान है। हस जटाधारी बन, त्रिपुड्र धारी होता है। परमहस शिखा और यज्ञोपवीत धारण नहीं करता। वह अपने कर को ही पात्र (भिक्षा-पात्र) मानता है, केवल एक कौपीन और एक ओढनी को ही अपने पास रखता है। तुरीयातीत सन्यासी फलाहारी होता है, केवल तीन घरो से प्राप्त भोजन मात्र उसे स्वीकार्य है। वह दिगबर बन कुणपवत् चेष्टाहीन रहता है। अवधूत निर्बंध एव स्वेच्छाचारी है, अजगर वृत्ति से अन्न-ग्रहण करता है तथा सर्वदा स्वरूपानुसधान में लगे रहता है।

परमहंस एव अवधूत—सन्यासियो में सर्वश्रेष्ठ है। दोनो प्रायः एक समान है। परमहस-उपनिषद् में परमहस की स्थिति का वर्णन प्राप्त है—

(सर्वान्कामान् परित्यज्य अद्वैते परमे स्थिति :
ज्ञानदंडो धृतो येन एकदडी स उच्यते ॥
काष्ठदंडो धृतो येन सर्वाशा ज्ञानवर्जितः।
तितिज्ञा ज्ञान वैराग्य शमादि गुण वर्जित :।
भिक्षामात्रेण यो जीवेत् स पापी यति वृत्ति हा ॥
स भाति न रकान्घोरन्महारौरव सज्ञ कान् ॥
इदम तरं ज्ञात्वा स परमहंसः।)

परमहस सभी कामनाओ को छोड़कर अद्वैत स्थिति में रमता है। वह ज्ञान-दंड को मानता है, इसलिये 'एकदडी' है। केवल काष्टदड को ही मानकर, समस्त आशाओ से युक्त, सब गुणो से वर्जित, जो भिक्षाटन से अपनी जीविका अर्जन करता है, वह पापी है। सन्यास को भ्रष्ट करनेवाला है नरक में जायेगा। यही मामूली सन्यासी और परमहस में अतर है।)

अवधूतोपनिषत् में अवधूत के ये लक्षण बताये गये है।

'स्वैर स्वैरविहरणम् तत्ससरणम्।
साबरा वा दिगबरा वा।
न तेषां धर्माधर्मो न मेध्यामेध्यौ।

(अपनी इच्छा के अनुसार विहरण करना उन का ससार है। ये दो प्रकार के है—साबर, दिगबर उन केलिये न कुछ धर्म है न अधर्म है। पवित्र भी नहीं, अपवित्र नहीं।)

न निरोधो न योत्पत्ति र्बद्धो न हि न साधकः
न मुमक्षुर्नवै मुक्त इत्ये षा परमार्थता ॥

(यहाँ किसी का निरोध नहीं, न उत्पत्ति न बद्ध है वह, न साधक, न मुमुक्षु, न मुक्त, यही उनकी परमार्थता है)

सन्यास आश्रम की महत्ता शब्दो में बतायी नहीं जा सकती। सन्यासी परान्न जीवी नहीं है, जैसाकि लोग समझा करते है। पूरे ससार के कल्याण केलिये अपना तन-मन समर्पण करनेवाला जो साशित व्रती होता है, वही सन्यासी है। देह-भरण व पोषण केलिये अन्नग्रहण जरूरी है, इसलिये वह मधुकरी वृत्ति करता है। उसे न जीने की लालसा है, न मरने की विवशता है। उसे न कोई कर्म है, न कर्तव्य है। यदि कोई कर्तव्य हो तो वही है लोक-कल्याण।

आज का सामाजिक जीवन इतना विच्छृखल व कलुषित बना है तो उस का कारण है शुद्ध सख से संपन्न सन्यासियो का अभाव। ऐसा सन्यासी अखंड शक्ति का स्रोत है। उसे न कोई सीमा है, न बंधन। वह सब सिद्धियो का आगार है।

हमारे सामने स्वामी विवेकानंद और स्वामी दयानंद की जीवनियाँ इस बात की साक्षी है।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

यज्ञोपवीत का उत्कर्ष

त्रिदण्डी स्वामी श्रीमन्नारायणाचार्य जीयर
'बहार

हमें समस्त वेद वाङ्मय से प्राणिमात्र के एकमात्र जीवनोपयोगी कर्त्तव्य का निर्देश अनादिकाल से अद्यावधि पर्यन्त तक मिल रहा है। आगे भी अधिकारी भेद से मिलता रहेगा। वेद वाङ्मय को धारण करने वाले तत्वचिन्तक ऋषि-महर्षियों ने अपने-अपने शब्दों में अपने अनुयायियों अधिकारी अनधिकारी रीत्या उसे प्रदानकर सुरक्षित रक्खा। यहाँ आज उस महासागर से गागर भर मात्र सम्प्राप्त कर सक्षिप्त यज्ञोपवीत का उत्कर्ष कहा जाता है। यज्ञोपवीत को विधानानुसार निर्मित करना चाहिए। यथा—

कार्पासो निर्मलः प्रोक्त' शुचिक्षेत्र समुद्भवः।
तच्चात्र सूत्र निष्काश संहितागुलिमूलिके॥
आवेष्टच षण्णवत्या तत त्रिगुणीकृत्य यत्नत।
अधि प्रदक्षिणावृत्तं समं स्यान्नवसूत्रकम्॥
तत्त्रि' प्रदक्षिणी कृत्य ब्रह्मग्रन्थि प्रदीयते॥
[श्रीकौण्डिन्य स्मति ११/१२/४९-५०-५१]

द्विजातिमात्र समस्त आश्रमवासी (ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यासी) निम्नलिखित वेदमन्त्र यज्ञोपवीत धारण करते समय अवश्य उच्चारण करें—

ॐ यज्ञोपवीत परमं पवित्र प्रजापतेर्यत्सहज पुरस्तात।
आयुष्यमग्रच प्रतिमुञ्चशुभ्रं यज्ञोपवीत वलमस्तु तेजः॥

तथा जीर्ण यज्ञोपवीत के समय निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण अनुसन्धान पूर्वक करता हुआ (न० म धारण के पश्चात्) त्याग कण्ठीवत करके ऊपर की ओर निकालें। यथा—

एतावद्दिन पर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारित मया।
जीर्णत्वात्त्वत् परित्यागो गच्छ सूत्र यथा सुखम्

यज्ञोपवीत धारण द्विजातिमात्र मे समस्ताश्रमवासी (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यासाश्रमी) को अवश्य करना चाहिए। जैसा कि प्रबल प्रमाण भी मिलता है। ब्रह्मचारी एक, गृहस्थ तथा वानप्रस्थ दो और तुरीयाश्रमवासी सन्यासी एक यज्ञोपवीत सर्वदा धारण करे। यथा—

एकमेवोपवीत स्याद्यतीना ब्रह्मचारिणम्।
—पराशरस्मृति ५/९/६१

एकैकमुपवीत तु यतीना ब्रह्मचारिणाम्।
गृहिणा च वनस्थानामुपवीत द्वय स्मृतम्॥
—हारीतसहृति

यज्ञसूत्र वटोरेक द्वे तथेतरयो' स्मृते।
एकमेव यतीना स्यादिति धर्मो व्यवस्थित.॥
ब्रह्मसूत्र परित्यागात् ब्रह्मचारी गृही बनी।
परिव्राडपि पतति तस्मात्तन्न परित्यजेत्॥
—भृगुस्मृति

उपवीत वटोरेकं द्वे तथेतरयोः स्मृते।
एकमेव यतीना स्यादिति शास्त्रस्य निर्णयः॥
— देवलकथित पारिजाते

एकैकमुपवीतं तु यतीना ब्रह्मचारिणाम्।
गृहीणां च वनस्थानामुपवीतद्वय स्मृतम्॥
—वृहत्पाराशर धर्मशास्त्र उ० ख० ५/९/१३

यज्ञोपवीत का परिवर्तन सन्तान उत्पन्न होने पर, मर जाने पर तथा चाण्डाल के स्पर्श करने पर नवीन यज्ञसूत्र धारण करें ऐसा महाराज मनु करते हैं। कुत्ता, गदहा के स्पर्श करने पर, म्लेच्छ के स्पर्श करने पर स्त्री सभोग करने पर, अज्ञान से मल्लाह के स्पर्श करने पर उसी क्षण से अन्तिम समस्त कर्म नष्ट हो जाता है। इसलिए सम्पूर्ण प्रयत्नपूर्वक स्नान करके यज्ञोपवीत धारण करना चाहिए। ब्रह्मसूत्र जब शरीर से नीचे गिरा हुआ अथवा टूटा हुआ होवे तब स्नान संकल्पपूर्वक पहले करके नवीन यज्ञोपवीत को धारण करना चाहिए। यथा—

सूतके मृतके क्षौरे चाण्डालस्पर्शने तथा।
यज्ञसूत्र नवीनं तु धारयेन्मनुरब्रवीत्॥
श्वान रासभ सम्पर्शे म्लेच्छादीना तथैव च।
मेहनेवाऽथवा ज्ञानाज्ञाविक वा स्पृशेद्यदि॥
तत्क्षणादेव नश्यन्ति कर्मणा द्विजसत्तमा।
तस्मात्सर्व प्रयत्नेन धार्यं स्नात्वोपवीतकम्॥
—भृगुस्मृति

पतित त्रुटित वाऽपि ब्रह्मसूत्र यदा भवेत्।
नूतनं धारयेद्विप्र. स्नानसकल्प पूर्वकम्॥
कौडिन्यस्मृति ११/१२/७०

जो द्विजातिमात्र (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) शास्त्राज्ञा के अनुसार यज्ञोपवीत को नही धारण करता है, उसके तप, ज्ञान और समस्त शुभ कर्म निष्फल हो जाते है। तर्क को अवलम्बन करके जो ब्राह्मण अज्ञान से ब्रह्मसूत्र (यज्ञोपवीत) को परित्याग कर देते हैं। वे स्वर्ग-मोक्ष के उत्तम मार्गों से गिर जाते हैं इसमें सन्देह नही है। यथा—

यो न धारयते विप्रो ब्रह्मसूत्रं विधानतः।
तपो ज्ञानं भवेत्तस्य सर्वं कर्म च निष्फलम्॥
परित्यजन्ति ये विप्रा मोहतर्कावलम्बिनः।
स्वर्गापवर्गमार्गाभ्या प्रच्युतास्ते न सशयः॥
—श्रीकौण्डिन्यस्मृति ११/१२/७-७२

यज्ञोपवीत सम्बन्धी विपुल सामाग्री भारतीय वाङ्मय में हैं। जिज्ञासुतन सदाचार्य से सानिध्य से सम्प्राप्त कर मार्गोन्मुख होवें। सम्प्रति परमोपयोगी यज्ञोपवीता को धारण करना अशस्त्रीय अनुपयोगि हैं ऐसा कहकर निकालने वालों की संख्या वृद्धिङ्गत है। परन्तु वे सामान्य लोगों के समक्ष ही मनमान बोल आत्मतोष करते हैं। जहाँ विद्वानों का जमघट है वहाँ वे एक क्षण भी नहीं टिकते। तो भी गायत्री मन्त्र और यज्ञोपवीत त्याग ग्रहणमन्त्र यज्ञोपवीतधारी को अवश्य स्मरण रखकर स्वस्वरूप स्थित रहना चाहिए। यज्ञोपवीत शास्त्र सम्मत के साथ साथ वर्तमान चाकचिक्यवाले विज्ञान से भी पूर्ण सम्मत है।

॥ श्रीरस्तु॥

श्रीवेंकटेश्वर स्वामीजी का मंदिर, मंगापुरम्.

दैनिक पूजा एवं दर्शन का कार्यक्रम

शनि, रवि, सोम, मंगल तथा बुधवार

प्रात :	५–००	से	५–३०	सुप्रभात
,,	५–३०	,,	८–००	विश्वरूप सर्वदर्शन
,,	८–००	,,	८–३०	तोमाल सेवा
,,	८–३०	,,	८–४५	कोलुवु तथा पंचागश्रवण
,,	८–४५	,,	९–३०	सहस्रनामार्चना
,,	९–३०	,,	१०–००	पहली घटी
,,	१०–००	दोपहर	१२–३०	सर्वदर्शन
दोपहर	१२–३०	,,	१–००	दूसरी अर्चना व दूसरी घंटी
	१–००	शाम	६–००	सर्वदर्शन
	६–००	,,	७–००	रात का कैंकर्य व रात की घटी
	७–००	,,	८–४५	सर्वदर्शन
	८–४५	,,	९–००	एकांतसेवा

गुरुवार

प्रातः	५–००	से	५–३०	सुप्रभात
,,	५–३०	,,	८–००	विश्वरूप सर्वदर्शन
,,	८–००	,,	८–३०	पूलंगि समर्पण (तोमाल सेवा)
,,	८–३०	,,	८–४५	कोलुवु तथा पंचांग श्रवण
,,	८–४५	,,	९–३०	सहस्रनामार्चना
,,	९–३०	,,	१०–००	पहली घटी
,,	१०–००	दोपहर	१२–३०	सर्वदर्शन
दोपहर	१२–३०	से	१–००	दूसरी अर्चना व दूसरी घंटी
,,	१–००	,,	६–००	सर्वदर्शन
,,	६–००	,,	७–००	रात का कैंकर्य व रात की घटी
,,	७–००	,,	८–४५	सर्वदर्शन
,,	८–४५	,,	९–००	एकांतसेवा

शुक्रवार

प्रातः	५–००	से	५–३०	सुप्रभात
,,	५–३०	,,	८–००	विश्वरूप सर्वदर्शन
,,	८–००	,,	९–००	सालिपु, नित्यकट्ल कैंकर्य व पहली घटी
,,	९–००	,,	१०–००	अभिषेक
,,	१०–००	,,	११–३०	समर्पण (तोमाल सेवा), दूसरी अर्चना व दूसरी घटी
,,	११–३०	से शाम	६–००	सर्वदर्शन
शाम	६–००	,,	७–००	रात का कैंकर्य व रात की घंटी
,,	७–००	,,	८–४५	सर्वदर्शन
,,	८–४५	,,	९–००	एकांत सेवा

सूचना :—

अर्जित सेवाओं की दरें :—

१) शुक्रवार के साप्ताहिक अभिषेक रु. १००/– (दो व्यक्तियों को प्रवेश)
२) अर्चना रु. ३/ ३) हारति रु. १/ ४) नारियल तोडना रु. ०–५०/
५) भगवान को प्रसाद (भोग) समर्पण भी किया जाता है ।

पेषकार, श्री वेंकटेश्वर स्वामीजी का मंदिर, मंगापुरम्

(पृष्ठ ६ का शेष)

जब तक विवेकानद नरेंद्र ही था, वे अपने सासारिक झंझटो में लिपटे, बिना तारण के, तिलमिला रहे थे । उन्हे भगवान रामकृष्ण की असीम कृपा प्राप्त थी, तो भी अपने मन में कई शकायें थीं, वे दुविधा की स्थिति से न उभर सके । अपनी सीमाओं का अतिक्रमण करने का कोई रास्ता उन्हे नजर नहीं आ रहा था। भौतिकता एव आध्यात्मिकता के बीच उन का मन डोल रहा था। भगवान रामकृष्ण की मृत्यु के बाद जब वे परिव्राजक बने, वह भी अलिग और अव्यक्त बन, कई नामो के साथ, अज्ञात और बिना पहचाये जाने, आखिर भारत के अंतिम छोर पर चिर कुमारी देवी कुमारी के दर्शन से वे अपनी सारी सीमाओ को लाघ गये और वे बने अनंत शक्ति के स्रोत स्वामी विवेकानद । दयानद भी ऐसे महान थे। उन की तर्क-शक्ति, संघटन-कार्य में कुशलता, देह-दाढ्र्य . अतुलनीय हैं। ये सब उन्हे उस वक्त प्राप्त हुये हैं, जब वे परिव्राजक बने थे।

आज की यह विडबना है सन्यासाश्रम में अनास्था-भाव। आज की जनता के मन में जो भौतिक-पिपासा जगी है, वही इस का एक मात्र कारण है। कई पीढियो तक धन-संचय के उपायो मे लगे रहना (आजन्म) . आज के मानव का 'जीवन-दर्शन' बना है।

परमहसो की चेतना दूसरे ढग की है। एक बार नरेंद्र ने भगवान रामकृष्ण की परीक्षा लेने हेतु उन के बिस्तर के नीचे कुछ सिक्के रखे थे जब परमहंस उस बिस्तर पर लेटे, तो उन्हें असह्य पीडा हुई। वे झेल नहीं पाये। नरेंद्र से उन्हो ने कहा "बिस्तर के नीचे कुछ होगा। मुझे पीडा हो रही है। जरा देखना।" तब नरेंद्र ने उस बिस्तर के नीचे से पैसे निकाल दिये।

अतः गीताकार ने कहा है—

"सदृश चेष्टते स्वस्याः प्रकृते ज्ञानि वानपि, प्रकृतिं यांति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति"

[ज्ञानी जन अपनी-अपनी प्रकृति के अनुसार कर्मों में तत्पर रहते हैं । जीव गण अपनी २ प्रकृति का अनुसरण करते हैं। तो निग्रह क्या करेगा ?]

सखा भक्ति

गोप बालकों के साथ श्रीकृष्ण की विविध लीलाएँ

नामदेव :—
आनंदें वनांत खेलताती गोप ।
... . चरताती ॥

वन में गोप, गायों के झुडों को चराते हुए आनन्द से खेल रहे थे कि अकस्मात उन्होंने दूर पर एक दैत्य को देखकर श्रीकृष्ण से कहा "हे कृष्ण! भारी विघ्न उपस्थित हुआ है। तुम छिप जाओ, हम तुन्हें कम्बल उढा देते हैं।"

अपने सब सखाओं को घवडाया हुआ देख कर मेघ-श्याम श्री कृष्ण ने कहा : 'तुम मन में कुछ चिन्ता मत करो। मै एक बाण से इसे मार डालूँगा" श्री कृष्ण ने अपने हृदय में विचार कर देखा कि उसकी मृत्यु वातात्मज के हाथ लिखी है। अत: उन्होंने गायों और गोपों को थोडी देर के लिए छिपा दिया और श्री रामचन्द्रजी का स्वरूप धारण कर लिया।

गायी गोप तेन्हां लपवोनी क्षणेक ।
जानकी नाथ झाला देव ॥

वे अपने हाथ में धनुष - बाण लिए थे। इस स्वरूप से उन्हों ने हनुमानजी का स्मरण किया।

श्री आनन्दमोहन, एम ए.,
हैदराबाद

अपने स्वामी का मनोगत जानकर मारुति मन में घवडा गए और शीघ्र ही उस वन में पहुँच कर उन्हों ने श्री रामचन्द्रजी के चरणों को प्रेम से प्रणाम किया। उन्हों ने कहा : "हे स्वामी! सेवक को क्या आज्ञा है?" भगवान ने कहा "अधिक क्या कहूँ? वह देखो एक असुर आ रहा है तुम्हारे हाथ से इसकी मृत्यु लिखी है। अत: मैंने तुम्हारा स्मरण किया। अब जाओ और उस को मारो।" हनुमान जी श्री राम के चरणों में प्रणाम कर उसे मारने के लिए निकले। असुर दूर से ही हनुमान जी को देखकर मन में कहने लगा कि यह काल कहाँ से आया। हनुमान जी ने उस की मर्दन मरोड कर उसका प्राण ले लिया। फिर आकार भगवान के चरणों से प्रणाम किया और दोनों हाथ जोड कर पूछने लगे कि अब क्या आज्ञा?

नामदेव ने अपने कुछ अभंगों में श्रीकृष्ण और गोपालों का आपस में खेलना तथा आमोद - प्रमोद का वर्णन किया है।

ऐसे वर्णनों में हुतुतु, हुँवरी, हमामा, कुरती, लपंडाव आदि खेलों का समावेश हुआ है।

इसी प्रकार नामदेव के अन्य अभंगों मे सख्य भाव की झांकी होती है यथा।

"कन्होवा निकडी आयुली गोधने"
"कान्हां तू आज कां झला पैमान"
"गडयानों राजा की रे झाला"
"हुवकीच्या मिषें हुतुतु खेलती"
आदि

सूरदास:— अब सूरदास की सखा भक्ति के कुछ पदों का रसास्वादन कीलिए:

"खेलत श्याम ग्वालनि संग"

श्रीकृष्ण गोपालों के साथ खेल रहे हैं। सुबल हल धर और श्री दामा नाना प्रकार के रंग दिखा रहे है। हाथ में हाथ मार कर अर्थात होडकरके अपनी-अपनी जोडी बना-कर सखा भागते हैं। हल धर ने कृष्ण से होडकरके दौडने के लिए मना किया कि तुम्हारी टाँग में चोट न लग जाए। परन्तु कृष्ण ने कहा "मेरे शरीर में बहुत बल है तथा मै अच्छी तरह दौडना जानता हूँ।" यह कह कर श्री कृष्ण भी दामा के साथ होड करके भागे। श्री दामा ने उनकी चिनौती स्वीकार कर ली लौर उन्होंने स्याम को पीछे से दौडकर पकड लिया। कृष्ण कहने लगे कि मै जान बूझ कर खडा हो गया हूँ। मुझे क्यों छूते हो? स्याम ने रीकसिया कर मन में क्रोध किया।

"खेलत में को काको गुसिया"

खेलने में छोटे-बडे का कोई विचार नहीं किया जाता।

(शेष पृष्ठ ३० पर)

सूरसागर के कूटपदों के पाठ तथा अर्थ की समस्याएँ और समाधान

डा० किशोरीलाल

(गतांक से)

इस अर्थ में सबसे खटकने वाली जो बात है वह है श्रीकृष्ण की गरदन के लिए सुमेरुपर्वत की चट्टान को अप्रस्तुत रूप में प्रस्तुत करना परम्परा में गरदन के लिए सुमेरु पर्वत का उल्लेख कहीं भी नहीं मिला। वास्तव में 'कन्धर' और 'धरमेरु' का जो अर्थ किया गया है, वह सर्वथा भ्रमात्मक है और पद के पूरे प्रसंग से सर्वथा भिन्न। 'कधर' संस्कृत के 'क' और 'धर' से मिल कर बना है। संस्कृत में 'क' जल के अर्थ में प्रायः गृहीत हुआ है। यहाँ भी कधर का अर्थ जलधर या बादल ही होगा। इसी प्रकार धर मेरु में 'मेरु' सुमेरु पर्वत के लिए तो प्रयुक्त होता ही है इसके अतिरिक्त यहाँ यह शब्द कूट की दृष्टि से व्यक्तिवाचक के बजाय जातिबोधक संज्ञा के रूप में आया है और 'मेरु' 'गिरि' अर्थ में गृहीत हुआ है। शब्द-विपर्यय से यह मेरुधर (गिरिधर) की जगह 'धरमेरु' हो गया है। अब इसका सामान्य अर्थ यही होगा कि हे सखी, हमारे पास से बादल गुजरे हे या श्रीकृष्ण। सूरसागर की एक अन्य समानार्थक पंक्ति से भी इस अर्थ की पुष्टि हो जाती है—

"कि हरि आजु पंथ इहिं गवने, स्याम
जलद की उनयौ"

कवि-कल्पना-प्रसूत चित्र कभी-कभी काव्य-रूढ़ियो एवं परम्परागत वैशिष्ट्य को पूरी तरह से आत्मसात् न करने वाले काव्य-रसिको के हाथ पड़कर किस तरह विकृत हो जाता है और कैसे भोंड़ा बन जाता है, इसके लिए सूर के एक प्रसिद्ध कूट को ले, इसे एक विद्वान ने किस प्रकार खींच-तान करके अर्थ किया है, उसे भी देखें—

पीताम्बर की शोभा सखि री! मोपै कही न
जाई ॥
सागर सुत-पति-आयुध मानौ, बन-रिपु-रिपु
मैं देख दिखाई ॥
जा रिपु पवन, तासु-सुत-स्वामी-आभा, कुडल
कोटि दिखाई ॥
छायापति तनु बदन विराजत, बंधुक अधरनि
रह लगाई ॥
नाकी-नायक बाहन की गति, राजत मुरली
सुधुनि बजाई ॥
सूरदास-प्रभु हर-सुत-बाहन, ता परत लैकै
सीस चढ़ाई ॥

इस छन्द के पूरे प्रसग को देखने स्पष्ट से पता चल रहा है कि पीताम्बर की शोभा की उत्प्रेक्षा (वस्तूत्प्रेक्षा) बादल में चमकने वाली बिजली से की गई है। पीताम्बर का रंग पीला होना और बिजली का भी रंग पीला होता है। बादल श्याम कहे गए हैं और श्रीकृष्ण का कलेवर भी श्याम ही है, अतः उत्प्रेक्षा बड़ी सटीक और वर्ण-साम्य के सर्वथा अनुकूल है। कवि का आशय यह है कि सागर-पुत्र—ऐरावत हाथी—उसके पति इन्द्र और इन्द्र का हथियार —वज्र या बिजली मानो बन रिपु-आग और आग का रिपु बादल में चमक रही है। इसकी जगह एक विद्वान् ने लिखा है "ऐसा जान पड़ रहा था मानो वन के वैरी अग्नि, अग्नि के वैरी जल, श्रीकृष्ण के नीले शरीर में सागर-पुत्र कौस्तुभ मणि के स्वामी विष्णु का शस्त्र सुदर्शन चक्र झिलमिला रहा हो। (कृष्ण के शरीर पर झीना पीताम्बर ऐसा लग रहा है जैसे जल में सुदर्शन चक्र चमक चमक कर झिलमिलाता हो)। श्रीकृष्ण के नीले शरीर के लिए जल और उनके पीताम्बर के लिए सुदर्शनचक्र उपमान कवि-परम्परा में कहाँ गृहीत हुआ है, और ऐसे उपमानो से काव्य में क्या स्वारस्य उत्पन्न होता है, यह स्पष्ट नहीं है। बाबू राधाकृष्णदास द्वारा संपादित वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से सूरसागर का जो संस्करण प्रकाशित हुआ है, उसमें 'सागर-सुत' की जगह 'सागर-सुता' पाठ ही स्वीकार किया गया है और तदनुसार लोगो ने सागर-सुता का अर्थ लक्ष्मी और लक्ष्मी के पति विष्णु और विष्णु का शस्त्र चक्रसुदर्शन ही समझकर अर्थ किया है। इसी तरह इस पद के तृतीय पंक्ति का भी बेढब और बहुत अस्वाभाविक अर्थ किया गया है। इसका वास्तविक अर्थ तो यो होना चाहिए—जा रिपु पवन—जिसका शत्रु पवन है, ऐसा बादल और बादल का सुत जल का स्वामी वरुण—वरुण का पर्याय सूर्य।

प्रायः देखा जाता है कि मनमानी अर्थ और मनमानी पाठ-निर्धारण की प्रवृत्तियाँ बराबर बढ़ती जा रही है, पर सूरसागर के कूट तथा कूटेतर पदों का जब तक कवि अभीष्ट अर्थ नहीं किया जाता तब तक हम यह दावा नहीं कर सकते कि हमने सूरसागर का वास्तविक उद्धार कर दिया। आज स्थिति यह है कि यदि किसी भाष्यकार ने किसी भी प्रकार का भाष्य प्रस्तुत कर दिया तो हम भी अक्षरशः उसी का अनुसरण कर रहे है, उसके आगे बढने का प्रयास नहीं करते। अपने कथन की पुष्टि के लिए सूर का एक प्रसिद्ध कूट पद दिया जा रहा है—

सूरसागर काव्य के प्रणेता भक्तकवि सूरदास

श्री गोविंदराज स्वामी का मंदिर, तिरुपति.

दैनिक-कार्यक्रम

प्रातः	5–00 से 5–30 तक	—	सुप्रभातम्
,,	5–30 ,, 7–00 ,,	—	**सर्वदर्शन**
,,	7–00 ,, 7–30 ,,	—	शुद्धि
,	7–30 ,, 8–00 ,,	—	तोमाल सेवा
,,	8–00 ,, 8–30 ,,	—	अर्चना
,,	8–30 ,, 9–00 ,,	—	पहली घटी तथा सात्तुमुरै
,,	9–00 से मध्याह्न 12–30 तक	—	**सर्वदर्शनम्**
मध्याह्न	12–30 से 1–00 तक	—	दूसरी घटी
,,	1–00 से शाम 6–00 तक	—	**सर्वदर्शनम्**
,,	6–00 से 7–00 तक	–	रात के कैंकर्य
,,	7–00 ,, 8–45 ,,	—	**सर्वदर्शनम्**
,,	9–00 बजे	—	एकांत सेवा।

अर्जित सेवाओं की दरें

तोमाल सेवा	रु. ४–००
सहस्र नामार्चना	रु ४–००
एकांत सेवा	रु. ४–००
हारति	रु १–००
विशेष दर्शन	रु २–००

(सिर्फ सर्व दर्शन के समय पर ही प्रवेश)

सूचनाः– एक ही व्यक्ति को अनुमति दी जाती है।

श्री गोविंदराज स्वामी के मंदिर से सम्बन्धित अन्य मंदिरों के अर्जित सेवाओं की दरें

१) श्री पार्थसारथी स्वामी का मंदिर
२) श्री वेंकटेश्वर स्वामी का मंदिर
३) श्री आण्डाल का मंदिर
४) श्री पुंडरीकवल्लि तायारु का मंदिर
५) श्री आंजनेय स्वामी का मंदिर —सन्निधि वीथी के पास
६) श्री संजीवराय स्वामी का मंदिर —श्री हथीराम जी मठ

अर्चना. रु. ०-७५.
हारति. रु. ०-२५.

अर्जित वाहन

१)	तिरुचि उत्सव	—	रु ६३–००
२)	बडा शेषवाहन	—	रु ६३–००
३)	छोटा शेष वाहन	—	रु. ३३–००
४)	गरुड वाहन	—	रु ३३–००
५)	हनुमन्त वाहन	—	रु ३३–००
६)	हंस वाहन	—	रु. ३३–००

भगवान को प्रसाद (भोग) समर्पण

१)	शीरा	—	रु, १५५–००
२)	बघार भात	—	रु ५०–००
३)	दही भात	—	रु. ४०–००
४)	पोंगलि	—	रु ५५–००
५)	शक्कर पोंगलि	—	रु ६५–००
६)	शक्कर भात	—	रु. ८५–००
७)	केसरी भात	—	रु. ९०–००
८)	१/४ सोला दोसे	—	रु. ३५–००

गायत्री की महिमा

डा० जयनारायण मल्लिक, प्राचार्य,
बिहार.

(गताक से)

पहला सोपान वृक्ष - योनि है जिसमें अहंकार तत्व या तम की प्रधानता है, दूसरा पशु-योनि जिसमें अहंकार तथा मन अर्थात् तम तथा रज, की प्रधानता है, तीसरा मनुष्य योनि जिसमें मन, बुद्धि - अहकार अथवा सत्व, रज, तम तीनों की प्रधानता है। मानव जीवन के तीसरे सोपान पर अर्थात् जीवन के मध्य में (भूलोक में) आ गया है। दो सोपान उसके आगे हैं। भुवः और स्वः। भुवः में अहंकार तत्व सोया रहेगा, केवल मन और बुद्धि-तत्व जगे रहेंगे। स्व. में मन भी सो जायगा, केवल बुद्धि - तत्व, विद्या या शुद्ध - सत्व जगा रहेगा। यह मानवता का चरम विकास है। अहंकार या तम जागृत (लक्षण - भोजन की प्रवृत्ति, स्वार्थ, जड़ता) गायत्री का प्रथम पद है 'ओम् भूर्भुवः स्वः' अर्थात् गायत्री सकेत करती है कि भुवः और स्वः की ओर देखो जीवन के निम्नस्तर की ओर मत देखो, ऊर्ध्व गामी बनो, देवत्व की ओर बढो, पशुता और दानवता से ऊपर उठो। जीवन के मध्य में अर्थात् भू पर हम आ गये हैं, हमें भुव· और स्वः की ओर जाना है। सविता की उपासना सगुण परब्रह्म परमेश्वर की उपासना है सविता प्रकाश के प्रतीक है और सविता के रूप में परमात्मा की उपासना अविद्या और अन्धकार से परे परमात्मा की ही उपासना है, जो आदित्य वर्ण हे अर्थात् ज्ञान तथा प्रकाश के भडार है। "वेदाहमेत पुरुष महान्तम् आदित्यवर्णं तमसः परस्तान्।" पुरुषसूक्त, शुक्लयजुर्वेद (दशम मडल)

गायत्री में सूर्य की उपासना नहीं है, परब्रह्म परमेश्वर की उपासना है। "ध्येयः सदा सवितृ मण्डल मध्यवर्ति नारायणः" जैसे कोई बृहत् प्रकाश - पिंड है और वह पीत वस्त्र से ढका हुआ है। दूर से देखने पर लोग कहेंगे कि पीले कपडे में कितना प्रकाश है। वस्तुतः पीले कपडे में प्रकाश नहीं है, पीले कपड़े के अन्तस्तल में जो प्रकाशपिण्ड है, उसका प्रकाश है। इसी प्रकार सविता की उपासना सूर्य की उपासना नहीं है, सूर्य के अन्तस्तल में जो ब्रह्मज्योति है—परब्रह्म की झलक है, उसकी उपासना है। अब गायत्री के अर्थ की ओर हम लोग देखे—

ॐ भूर्भुव· स्व· तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न. प्रचोदयात्।
ओम् शब्द में तीन अक्षर हैं अ+उ+म्।

इसको प्रणव कहा जाता है। प्रणव का अर्थ है—

अकारार्थो विष्णुर्जगदुदयरक्षा प्रलयकृन्।
मकारार्थो जीवस्तदुपकरण वैष्णवमिदम्॥
उकारो नन्याहं नियमयति सम्बन्धमनयोः।
त्रयीसारस्त्यात्मा प्रणव मिममर्थं समदिशत्॥

अर्थात् 'अ' परमात्मा घट घट वासी अन्तर्यामी स्वरूप है, जो सर्वत्र सभी प्राणियो में वर्तमान है।

ईशावास्यमिद सर्वंयत्किञ्च जगत्यां जगत्।
(ईशोपनिषद्)

सब नर हैं भगवत्स्वरूप, प्रत्येक नर नारीका शरीर परमात्मा का मन्दिर है, परमात्मा का अश जीवात्मा प्रत्येक प्राणी में वर्तमान है। अत प्रत्येक प्राणी की सेवा परमात्मा का कैंकर्य है। किसी का अनिष्ट सोचना किसी की निन्दा करना परमात्मा की अवहेलना है। वह अकार स्वरूप अन्तर्यामी भगवान सर्वत्र हे अतः ऐसा कोई भी स्थल नहीं है, जहाँ मनुष्य छिपकर पाप कर सके। (म्)का अर्थ है जीवात्मा जो परमात्मा का अश है, और भगवद्दास है उकार का अर्थ है भगवान और जीव का शाश्वत अनन्य सम्बन्ध। जीव भगवान का शरणागत है वह प्रपन्न है, उसे अपने आपको भगवान के श्रीचरणो में न्योछावर (आत्मसमर्पण) कर देना चाहिये। तब से उसका एक ही कर्तव्य रह जाता है— 'आनुकूल्यस्य संकल्पः प्रातिकूल्यस्य वर्जनम्।' जो कार्य भगवान् को रुचे, उनकी इच्छा के अनुकूल हो, उसे करना और जो कार्य भगवान की इच्छा के विपरीत हो, उसे नहीं करना, अर्थात् भगवान् की आज्ञानुसार

श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामीजी का मंदिर
नारायणवनम्, [ति॰ ति. देवस्थान]
दैनिक-कार्यक्रम

१	सुप्रभात	प्रात:	६–०० से	प्रात·	६–३० तक
२.	विश्वरूप सर्व दर्शन	,,	६–३० ,,	,,	८–३० ,,
३.	तोमालसेवा	,,	८–३० ,	,,	९–०० ,,
४	कोलुवु & अर्चना	,,	९–०० ,,	,,	९–३० ,,
५.	पहली घंटी, सात्तुमोरै	,,	९–३० ,,	,,	१०–०० ,,
६.	सर्वदर्शन	,,	१०–०० ,,	,,	११–३० ,,
७.	दूसरी घंटी अष्टोत्तरम् (एकात)	,,	११–३० ,,	मध्याह्न	१२–०० ,,
८.	तीर्मानम्	मध्याह्न	१२–००		
९.	सर्वदर्शन	शाम	४–०० से	,,	६–०० ,,
१०.	तोमाल सेवा & अर्चना रात का कैंकर्य तथा सात्तुमोरै	शाम	६–०० ,,	,,	७–०० ,,
११.	सर्वदर्शन	रात	७–०० ,,	,,	८–४५ ,,
१२.	एकांत सेवा	,,	८–४५ ,,	,,	९–००

अर्जित सेवाओं की दरें

१	अर्चना & अष्टोत्तरम्	रु ३–००
२.	हारति	रु. १–००
३.	नारियल फोडना	रु. ०–५०
४	सहस्र नामार्चना	रु. ५–००
५.	पूलंगि (गुरुवार)	रु १–००
६.	अभिषेकानंतर दर्शन (शुक्रवार)	रु. १–००

कार्यनिर्वहणाधिकारी,
ति ति देवस्थान, तिरुपति.

आचरण करना। भगवान् के अनुकूल अपने जीवन को बना डालना। प्रणव का सकेत है कि मनुष्य सारे कर्मों को कर्तव्य की प्रेरणा से भगवत्कैंकर्य समझकर करता जाय, कर्म अनासक्त और निर्लिप्त होकर करने से वासना की डोरी और माया की फास आप से आप कट जाती है। मनुष्य को जिस परिस्थिति में रखा है। कर्तव्य की प्रेरणा से उसी के अनुकूल आचरण भगवत्कैंकर्य है। 'स्वे स्वेकर्मण्यभिरत ससिद्धि लभते नर:। (गीता) किसानों के लिये हल जोतना, छात्रो के लिये पढना, कलाकारो के लिये कला कृति, शिक्षको के लिये पढाना, न्यायाधीशो के लिये न्याय करना, चिकित्सको के लिये चिकित्सा, महिलाओ के लिये गृह-कार्य तथा बच्चो का लालन-पालन सब कुछ भगवत्कैंकर्य है। भगवान की प्रसन्नता के लिये कर्तव्य की प्रेरणा से जो कुछ किया जाय सब भगवत्कैंकर्य है। गायत्री में जो भूर्भुव, स्व है, उसका संकेत पशुता के ऊपर मानवता की विजय है तथा इसका तात्पर्य है मानवता को निम्नस्तर से उच्चस्तर पर ले जाने की चेष्टा, हमें पशुता और दानवता की ओर नहीं जाना है।

ओम् भूर्भु व:स्व: तत्सवितु: देवस्य वरेण्य
भर्ग: धीमहि य: न: धिय: प्रचोदयात।

जिस परब्रह्म की दिव्य ज्योति से यह सारा विश्व ओत-प्रेत है, हम उसके शरणागत होकर सदैव जीवन के उच्च सोपानो की ओर—भुव: और स्व: की ओर बढने की चेष्टा करें, अविद्या और वासना के अन्धकार में नहीं भटकें, परमात्मा की दिव्य ज्योति ही हमारा पथ-प्रदर्शक हो। हम उस सवितृ-मडल मध्यवर्त्ती परब्रह्म परमेश्वर के श्रेष्ठ और पवित्र तेज को आराधना और उपासना करते हैं, जो हमारी बुद्धि को निर्मल बनाकर शुभ कर्मों में भगवत्कैंकर्य हेतु प्रेरित करें।

जीवन के पथ पर अविद्या के अन्धकार में जहाँ वासना अनेक जन्मो के कर्मों का रस पीकर क्रुद्ध सर्पिणी की तरह फुफकार मारती रहती है हमारी बुद्धि ही एक रोशनी है जो हमारा पथ-प्रदर्शन करती है। हम पथ भ्रष्ट नहीं हो जायें इसके लिये आवश्यक है कि हमारी रोशनी हमारी बुद्धि धूमिल और मटमैली नहीं हो जायें। गायत्री हमारी बुद्धि का स्वच्छ निर्मल बना देती है और हमें सत्कर्मों की प्रेरणा देती है। यह

(शेष पृष्ठ २६ पर)

वैष्णव भक्ति

डॉ एस. वेणुगोपालाचार्य,
माण्ड्य (कर्नाटक).

गतांक से

स्वामी हरिदास :—

स्वामी हरिदास सखी संप्रदाय के प्रवर्तक थे। उनकी काव्यरचना पदों के रूप में है। हरिदास जी की बनो और हरिदास के पद नामक ग्रन्थो में उनके भक्तिपूर्णपद सगृहित हैं। हरिदासी सप्रदाय में विट्ठल विपुलदेव के भो पद प्रसिद्ध हैं।

सूरकालीन कृष्णभक्तों से उपर्युक्त ग्रन्थों के अतिरिक्त सैकडो छोटे-बड़े कृष्णभक्तिपूर्ण ग्रन्थ रचे गये। अकबर के दरबार में रहीम, गंग, नरहरि, बीरबल, टोडरमल, आदि कृष्ण-भक्त सेवावृत्ति मे रहकर भी भक्तिपूर्ण कृतियो की रचना करके मुगल दरबार में भी कृष्णभक्ति के प्रति शासकों का ध्यान आकर्षित करते थे।

रहीम:—

रहीम इतिहास-प्रसिद्ध बैरामखाँ के पुत्र थे। रहीम दोहावली, बैरव नायिका भेद, शृगार-सोरठ मदनाष्टक, रासपचाध्यायी, फुटकल बरवैं, कविल, सवैये, रहीम-काव्य आदि रहीम की कृतियाँ मानी जाती हैं। उनकी कृतियों में श्रीकृष्ण के बाल-रूप-वर्णन, गोपियो की श्रीकृष्ण से मिलने की तीव्र आकांक्षा आदि अकित हैं। रहीम के भाव और भाषा केवल सूरदास के पदों में प्राप्त हैं। उनके पदो की शब्दयोजना सुमधुर और संगीतात्मक है। सूर-कालीन कृष्ण भक्तों के अतिरिक्त, मीराबाई, नरोत्तमदास, गदाधरभट्ट, सूरदास, मदनमोहन, परशुरामदेव आदि अगली पीढ़ी के भक्तों से कृष्णभक्ति की परंपरा जारी रही। मीराबाई प्रेम-पूजारिन थी। उनके पदो में विरहासक्ति तथा आत्मनिवेदनभक्ति की परिपूर्ण अभिव्यक्ति द्रष्टव्य है। मीराबाई की कृतियो में राग-गोविन्द, गीता-गोविन्द की टीका, नरसी जी रो माहेरो, सोरठ के पद, मलार और गर्वागीत आदि प्रसिद्ध है।

नरोत्तमदास:—

नरोत्तमदास की कृतियों में केवल सुदामा चरित्र प्राप्त है। उसमें दीनहृदय के सजीव चित्र अकित हैं। सुदामाचरित्र का आधार श्रीमद्भागवत का दशम-स्कन्ध है। वह श्रीकृष्ण की कोमल मैत्री और दयापूर्ण हृदय का परिचय देनेवाला अनुपम खण्डकाव्य है।

गदाधरभट्ट:—

गदाधरभट्ट-के पदो में व्रज और गोकुल में श्रीकृष्ण की लीलाओ तथा राधाकृष्ण के रास आदि का सुन्दर वर्णन है। सूरदास मदनमोहन के पदो में नखशिख, रासविलास, होली, हिंडोला आदि के अनुपम वर्णन हैं।

श्रीभट्ट:—

निबार्क सप्रदाय में प्रथम व्रजभाषा के कवि माने जाते हैं। उनकी कृतियो में आदिवाणी, युगलशलक, कृष्णशरणानतिस्तोत्र आदि सुप्रसिद्ध हैं। महावाणी नामक कृति में अष्टयामसेवा आदि के वर्णन हैं।

परशुरामदेव:—

परशुरामदेवकृत परशुरामसागर नामक ग्रन्थ में भगवान की लीलाओ का विवेचन, संसार, की सारहीनता, भगवद्भक्ति का उपदेश आदि दोहे, छप्पय और पदो में आकर्षक शैली में निरूपित है।

पन्द्रहवीं शती से सत्रहवीं शती तक का महत्त्व तथा तात्कालीन वैष्णव भक्ति-साहित्य

भारतीयो को राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक तथा साहित्यिक आदि सभी क्षेत्रों में ईसा की पन्द्रहवीं शती से तीन शताब्दियो तक अभूतपूर्व उन्नति करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। दसवीं शती से चौदहवीं शती तक आक्रमणकारी मुसलमानों से लड लड़कर भारत के अधिकाश राजवंशों का विध्वंस हो गया था। उत्तर भारत का अधिकांश भाग विजयी मुसलमान शासको के अधिकार में आ गया। अपनी पद स्थिति से लाभ उठाकर बहुत से मुसलमान शासक भारतीय जनता पर मनमाना अत्याचार करने लगे। वे हिन्दुओ के देवमन्दिरो को गिराकर मस्जिदें बनाना, गैर मुसलमानों पर असहनीय दबाव डालकर उन्हें मतान्तरित करना आदि से अपने प्रभुत्व को भारत में स्थायी करना चाहते थे। सन् १२९६ से १३१३ तक अल्लाउद्दीन के सरदार मल्लिक काफूर के

आक्रमणो से होयसल, यादव, पाण्ड्य, वारंगल, मालवा और राजस्थान के हिन्दूराज्य नष्टभ्रष्ट हो गये। मुहम्मदबिन तुगलक के शासक-प्रबंध और असफल कार्यों के परिणाम-स्वरूप चौदहवीं शती से पन्द्रहवीं शती तक उत्तर भारत में अशांति का बोलबाला था। फिरोजशाह अपनी प्रजाकी उन्नति पर ध्यान देता था। किन्तु हिन्दुओ के प्रति उसका सरकारी व्यवहार पक्षपातपूर्ण था। फिरोजशाह के पश्चात् देहली के चारो ओर लूटपाट और सामूहिक हत्याकाण्ड हुए। देश के व्यापार, उद्योग और कलाकौशल लुप्त हुए और दुर्भिक्ष, महामारी और लूटपाट से सामाजिक जीवन और सपत्ति की कल्पनातीत क्षति पहुंची। ईशवीं शती से परिस्थिति सुधरने लगी।

सन् १३३६ ई. से विजयनगर और १३४७ ई से बहमनी राज्यो की स्थापना हुई। उनकी ही देखादेखी उत्तर भारत में असंख्य छोटे छोटे राज्य स्थापित हो गये। १४५१ से १५१७ तक सैयद ओर लूदी वंशो के वश में केवल देहली के आसपास के प्रदेश बचे थे। १५२६ से १७०७ तक देहली का राज्य मुगलो के हाथ में आ गया था। औरगजेब को छोडकर अन्य मुगल सम्राट हिन्दुओ के प्रति उदार थे। वे उनकी सहायता से अपने साम्राज्य की वृद्धि तथा उन्नति में सहयोग पाने के अभिलाषी थे। अकबर से जजिया कर रद्द हुआ और सभी क्षेत्रो में हिन्दुओ को मुसलमानो के ही समान अधिकार मिलने लगे। अकबर के प्रयत्नो से राजपुत्र रासा मुगल संम्राटो के परम मित्र बन गये और उनमें वैवाहिक सम्बन्ध भी आरंभ हुआ। फलस्वरूप चौदहवीं शती के आरभ में धार्मिक क्षेत्र में कबीर, दादूनानक आदि द्वारा हिन्दू मुसलमानो को एक-साथ लाने के प्रयत्न स्वाभाविक ही थे। कालक्रम में हिन्दुओ को अपनी दुर्दशा को सुधारने केलिए वैष्णव भक्ति को महिमा ही परमोपाय विदित हुई। फिर क्या? पन्द्रहवीं शती से तीन सौ वर्षो तक वैष्णव भक्ति का स्वर्णयुग ही कहलाता है। इस अवधि के पहले आविर्भूत कबीर आदि साधु-सन्त अपनी कृतियों में निराकार या निर्गुणभक्ति के प्रतिपादन करने का प्रयत्न करते थे। इस कोटि के ग्रन्थो में कबीरदास की साखी, रमैनी और सबद, पीपा और गुरुनानक की बानियाँ, सेना की सूक्तियाँ, मलूकदास से रचित ज्ञान बोध, ज्ञानसमुद दादू दयाल का ज्ञानसमुद आदि प्रसिद्ध है। सूफी सन्त इस्लाम धर्म को लोकप्रिय बनाने अलौकिक प्रेम को भारतीय पौराणिक कथाओं तथा वैष्णव भक्ति के ग्रन्थो के रूप में धार्मिक ग्रन्थों की रचना करते लगे। जायसी कृत पद्मावत, कुतुबन, शेख आदि से रचित मुग्धावली, खडरावती, प्रेमावती आदि में भारतीय तथा इस्लामी सस्कृतियो के बीच सामजस्य लाने और उन दोनो में उपलब्ध प्रेमतत्त्व तथा अद्वैत भावनाओ को जनसाधारण मे प्रेमगाथाओ के द्वारा लोकप्रिय बनाने का महत्कार्य हुआ। कबीर आदि निर्गुणपथी साधुओ की कृतियो में हिन्दू और मुसलमानो के बाह्याडंबरो की कटु टीकाएं प्रस्तुत हुई सूफी सन्तो की कृतियो में प्रेमतत्व का महत्व भी प्रतिपादित हुआ। इनके फलस्वरुप हिन्दू मुसलमानो के सघर्ष कम होते गये। सगुणभक्ति के प्रति शासित वर्ग में प्रचलित कटु आचरण अन्त हुए। उनके पारस्परिक सम्बन्ध निकट होते गये।

चौदहवीं शताब्दी में उत्तर भारत में अवतरित रामानन्दस्वामी ने सब जाति के लोगो का शिष्य बनाया और रामभक्ति के उपदेश दिये। १४७९ ई में अवतरित वल्लभाचार्य ने व्रजभूमि को कृष्णभक्ति का केन्द्र बनाकर कृष्णभक्ति की शिक्षा दी और व्रजभाषा में कृष्णभक्ति साहित्य का पूर्ण विकास हुआ। ई-सन् १५०३ से १५७३ तक का काल सूरकाल माना जा सकता है। सूरदास की कृतियाँ अनुपम हैं। उनके अतिरिक्त लग-

(शेष पृष्ठ २६ पर)

भगवान बालाजी का ब्रह्मोत्सव
तिरुमल

तिरुमल-तिरुपति के सभी उत्सवों में कलियुग के वरद सप्तगिरीश्वर भगवान बालाजी का ब्रह्मोत्सव सबसे अधिक महत्वपूर्ण तथा उल्लेखनीय है। शिलालेखों से विदित होता है कि इस उत्सव का श्रीगणेश ई० ९६६ में हुआ था। अंकुरार्पण से लेकर ध्वजारोहण तक यह उत्सव दस दिन बडे धूमधाम से मनाया जाता है। इस साल तक इसी प्रकार इस महोत्सव का आयोजन होता रहा।

ई० १३९२ के शिलालेख से ज्ञात होता है कि ४ शताब्दियों के पश्चात् इस उत्सव कार्यक्रम में तीर्थवारि उत्सव के साथ एक और उत्सव जोडा गया जो विडयालि उत्सव के नाम से अभिहित किया गया। उस समय एक वर्ष सात ब्रह्मोत्सवों का आयोजन होता था। ई० १४४५-१४४७ के समय इस उत्सव में और कुछ परिवर्तन लाये गये। ई० १५४५ के शिलालेख के अनुसार पता चलता है कि ब्रह्मोत्सव के पहले दिन तिरुक्कल्याणम्' मनाया जाता था। ई० १४४६ में ब्रह्मोत्सव कार्यक्रम में 'पुष्पयागम्' नामक एक ग्यारहवां उत्सव का प्रबंध किया गया। इस के बाद दो 'विडयालि' उत्सवों को मनाने के कारण ब्रह्मोत्सव १३ दिनों तक सवैभव मनाया जाता था। इस प्रकार बालाजी के ब्रह्मोत्सव में कालक्रम में हम अनेक परिवर्तन देखते हैं।
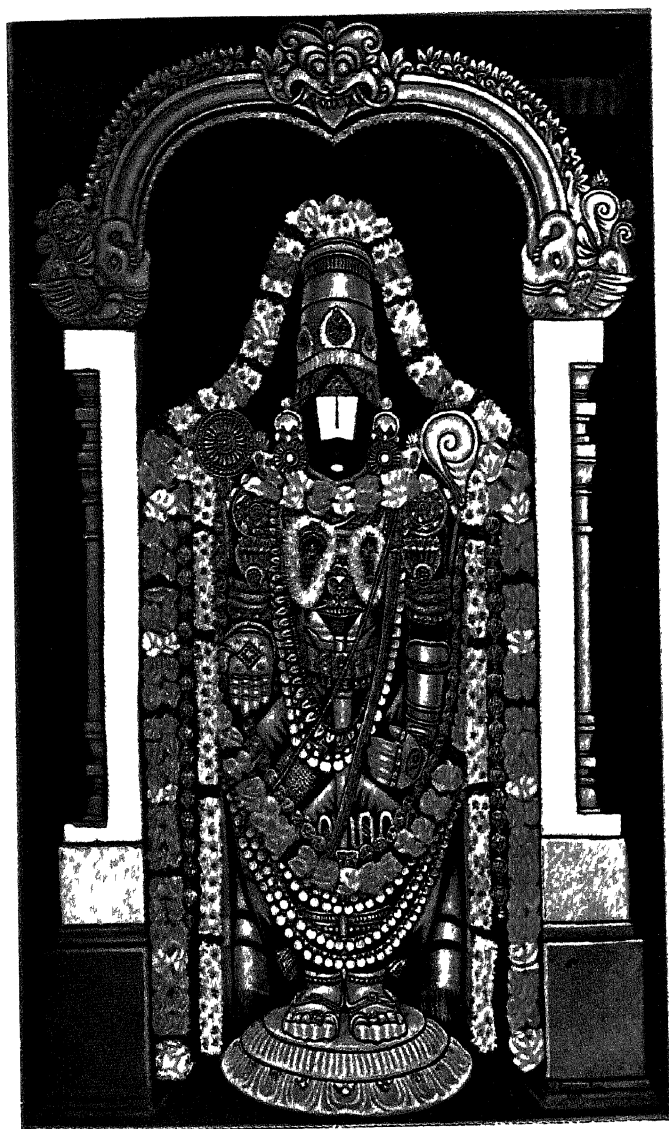
पुराणों से मालूम होगा कि पहले पितामह ब्रह्मा ने इस उत्सव का आरंभ किया था। उस समय से लेकर इस उत्सव में अनेकानेक परिवर्तन हुए। वराह पुराण, भविष्योत्तर पुराण, इत्यादि पुराणों में इस का उल्लेख है।

यहाँ पर हम इस ब्रह्मोत्सव कार्यक्रम का संक्षिप्त रूप से उल्लेख करते हैं। इस दस दिवसीय उत्सव में पहला दिन उतना महत्व नहीं रखता है।

पहला दिन :—

श्री बालाजी के ब्रह्मोत्सव के पहले दिन शाम को विष्वक्सेन को मंदिर के चारों ओर शोभायात्रा में निकालते हैं और यागशाला में होमकुण्डों के लिए मिट्टी का संग्रह करते हैं।

उत्सव का दूसरा दिन:—

दूसरे दिन से ही वास्तव में ब्रह्मोत्सव का आरंभ होता है। उस दिन गरुड के चिह्न से शोभित नवीन

आनंद निलय

वस्त्र की ध्वजा बनाकर फहराते हैं। यह ध्वजारोहण उत्सव निर्णीत शुभ मुहूर्त में पवित्र वेद मंत्रों के सुस्वर पाठ से बडी सजधज तथा वैभवोपेत से सपन्न होता है। इस दिन सुबह मलयप्प स्वामी की उत्सव मूर्ति को छोटे शेषवाहन पर विराजित कर शोभायात्रा में निकालते हैं।

विष्वक्सेन के द्वारा ब्रह्मोत्सव में भाग लेने केलिए सभी देवताओं को निमंत्रण भेजा जाता है। 'तिरुमल राय मंटप' में विष्वक्सेन की मूर्ति को विराजकर उत्सव का आरंभ करते हैं। रात के समय मलयप्पस्वामी की अपनी देवियों सहित बडे शेषवाहन पर शोभायात्रा सपन्न होगी।

उत्सव का तीसरा दिन :

इस दिन सवेरे सिंह वाहन पर बालाजी की शोभा-यात्रा सपन्न होती है। असंख्य भक्तगण नयनानंददायक उस शोभा यात्रा का दर्शन कर धन्य होते हैं।

रात के समय भगवान बालाजी की उत्सव मूर्ति को हंस वाहन पर विराजित कर शोभायात्रा को सपन्न करते हैं। हमारा विश्वास है कि जो भक्त हंस वाहन पर विराजमान बालाजी के दर्शन करते हैं, वे सभी बाधाओं से विमुक्त होते हैं।

उत्सव का चौथा दिन :

चौथे दिन प्रात कल्पवृक्ष वाहन पर अपनी देवियों सहित भगवान बालाजी की शोभायात्रा निकलती है। कहा जाता है कि भगवान बालाजी अपने पादकमलों मे शरण लेने वाले भक्तों को लौकिक तथा पारलौकिक विभूतियो को प्रदान करने के लिये ही इस वेङ्कटाचल पर पधारे हे। इस संकेत के रूप में भगवान की कल्पवृक्ष वाहन पर शोभायात्रा सपन्न होती है।

इस दिन रात को सुवर्णरजित तथा सुसज्जित सर्व-भूपाल वाहन पर भगवान को विराजित कर शोभायात्रा निकालते है। रात के समय इस वाहन पर अमूल्य अभरणों से अलकृत भगवान के दर्शन से असंख्य भक्तगण जनम जनमों के पापों से विमुक्ति का अनुभव करते हैं।

ब्रह्मोत्सव का पांचवां दिन :

यह पुराणगाथा सर्वविदित है कि श्री महाविष्णु ने मोहिनी का रूप धारण कर राक्षसों को धोखा देकर देवताओं को अमृत बांट दिया। श्रीमद्भागवत में भी कहा गया है कि श्री महाविष्णु ने अपने इस मोहिनी रूप से भगवान शंकर को भी सम्मोहित कर डाला। मोहिनी वेष से श्रृगार कर स्वामी के वरदहस्त को अभयहस्त की मुद्रा में सजाकर हाथीदांत की पालकी में शोभायात्रा निकालते हैं।
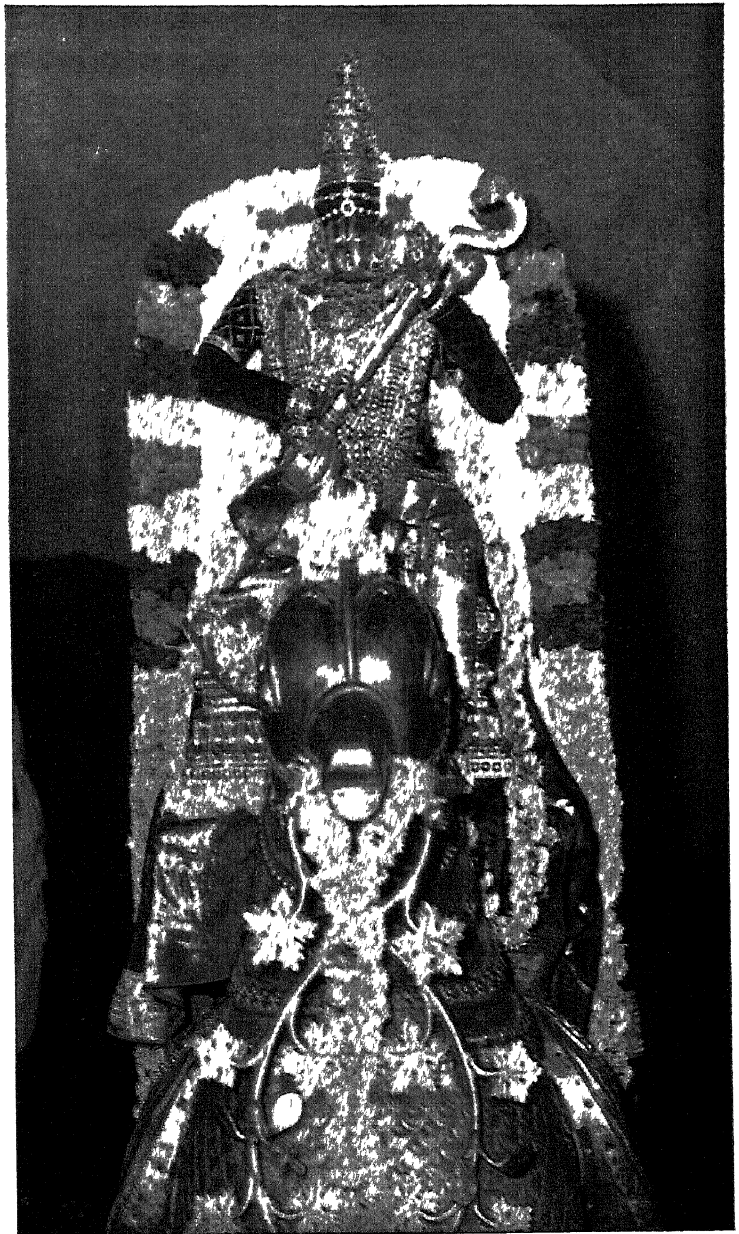
हंस वाहन

ब्रह्मोत्सव में पांचवा दिन बडा महत्वपूर्ण दिन समझा जाता है। इस दिन भगवान बालाजी को मोहिनी के अवतार के रूप में सजाकर शोभायात्रा निकालते है। इस दिन स्वामी की मूर्ति का स्त्री अभूषणों से श्रृगार करते हैं।

रात के समय गरुड वाहन पर भगवान बालाजी को विराजित कर शोभायात्रा निकाली जाती है. ब्रह्मोत्सव के उत्सवों में गरुडोत्सव बडा महत्वपूर्ण तथा उल्लेखनीय है। इस दिन बालाजी की उत्सव मूर्ति को मकरकंठी, लक्ष्मीहार इत्यादि सभी अमूल्य आभरणों से शृंगार करते हैं।

इस शोभयात्रा के दर्शनार्थ देश के कोने कोने से भक्तगण तिरुमल पहुचकर बालाजी के शुभाशीस प्राप्त करते हैं।

सिंह वाहन
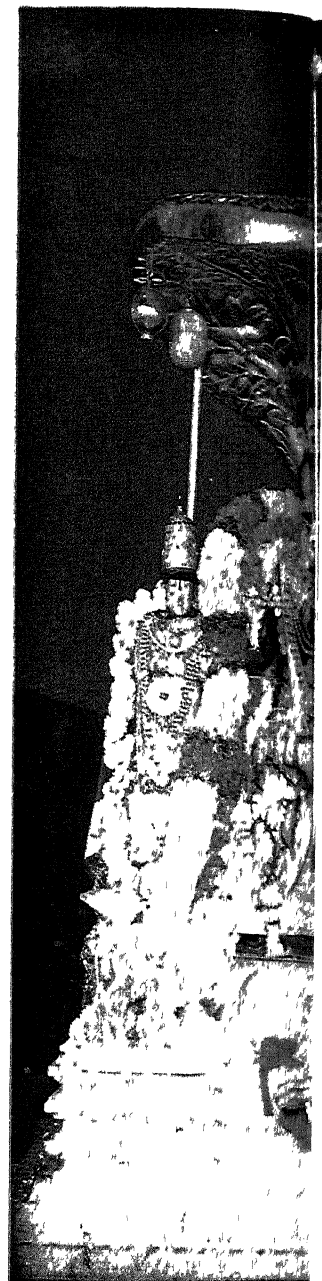
कल्पवृ

ब्रह्मोत्सव का छठा दिन :

इस दिन प्रात. हनुमान वाहन पर बालाजी की शोभा यात्रा सपन्न होती है। रात के समय गज वाहन पर भगवान की उत्सव मूर्ति को विराजित कर शोभायात्रा मनायी जाती है। इसीदिन शाम के समय बालाजी का वसतोत्सव संपन्न होगा। बालाजी अपनी देवियों सहित पश्चिम माडा वीथी स्थित वसतमंटप में विराजित है। वहाँ पर स्वामी का अभिषेक किया जाता है और स्वामी के दरबार का प्रबध भी होता है।

वाहन

ब्रह्मोत्सव का सातवां दिन :–

इस दिन प्रातः सूर्यप्रभा तथा रात के समय चन्द्रप्रभा पर बालाजी की शोभायात्राएँ सपन्न होगी। यह इस संकेत का सूचक है कि भगवान बालाजी सूर्य तथा चन्द्र मण्डल में रहते है। यह निश्शक कहा जा सकता है कि तिरुमल पर बालाजी का सूर्यप्रभा-वाहन समूचे दक्षिण भारत के मदिरों के सभी सूर्य प्रभा वाहनो से भी बडा और वैभवोपेत है।

ब्रह्मोत्सव का आठवां दिन :–

आठवां दिन रथोत्सव का शुभ दिन है। गरुडोत्सव के समान यह भी बडा महत्वपूर्ण दिन है। प्रातः ही श्री मलयप्प स्वामी को अपनी देवियों सहित वज्र-कवचादि अमूल्य आभरणों से सजा कर सुसज्जित रथ पर विराज देते है। बालाजी का रथ तो आकार में बडा परिमाणवाला, भारी तथा दारु निर्मित है। इसे उत्सव सदर्शनार्थी भक्त यात्रीगण ही भक्तपरवश होकर खींचते है। उस समय भक्तों के "गोविन्द-गोविन्द"
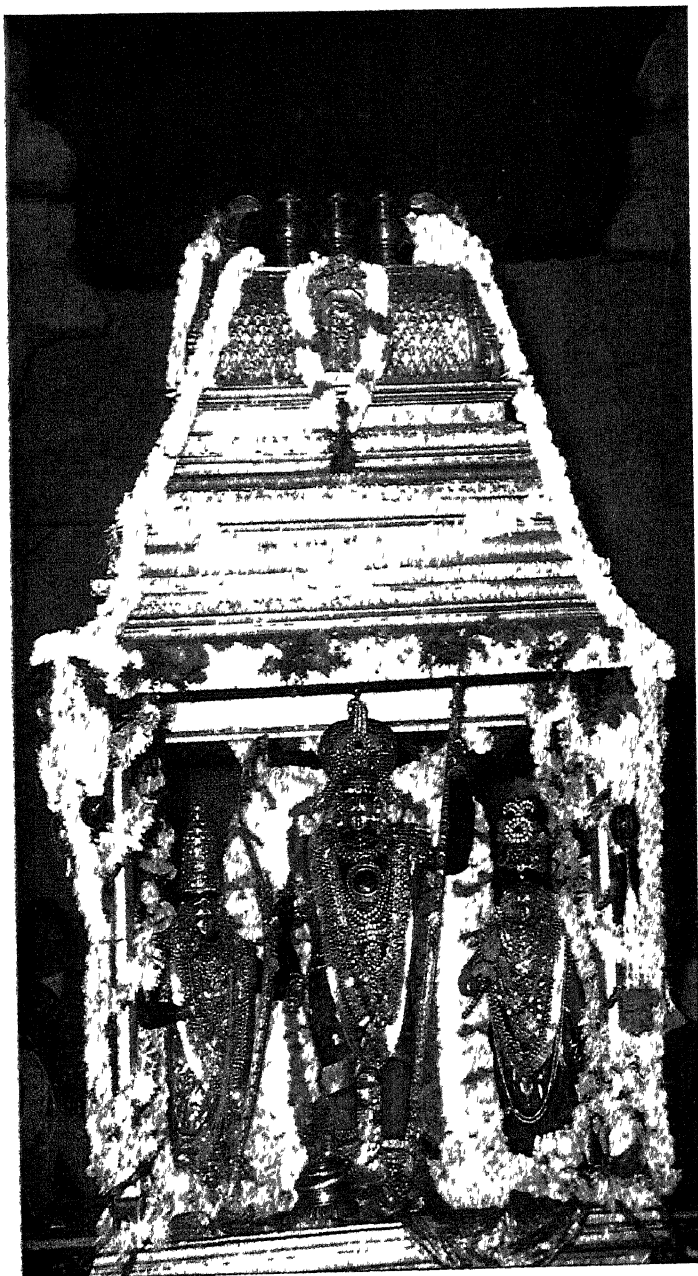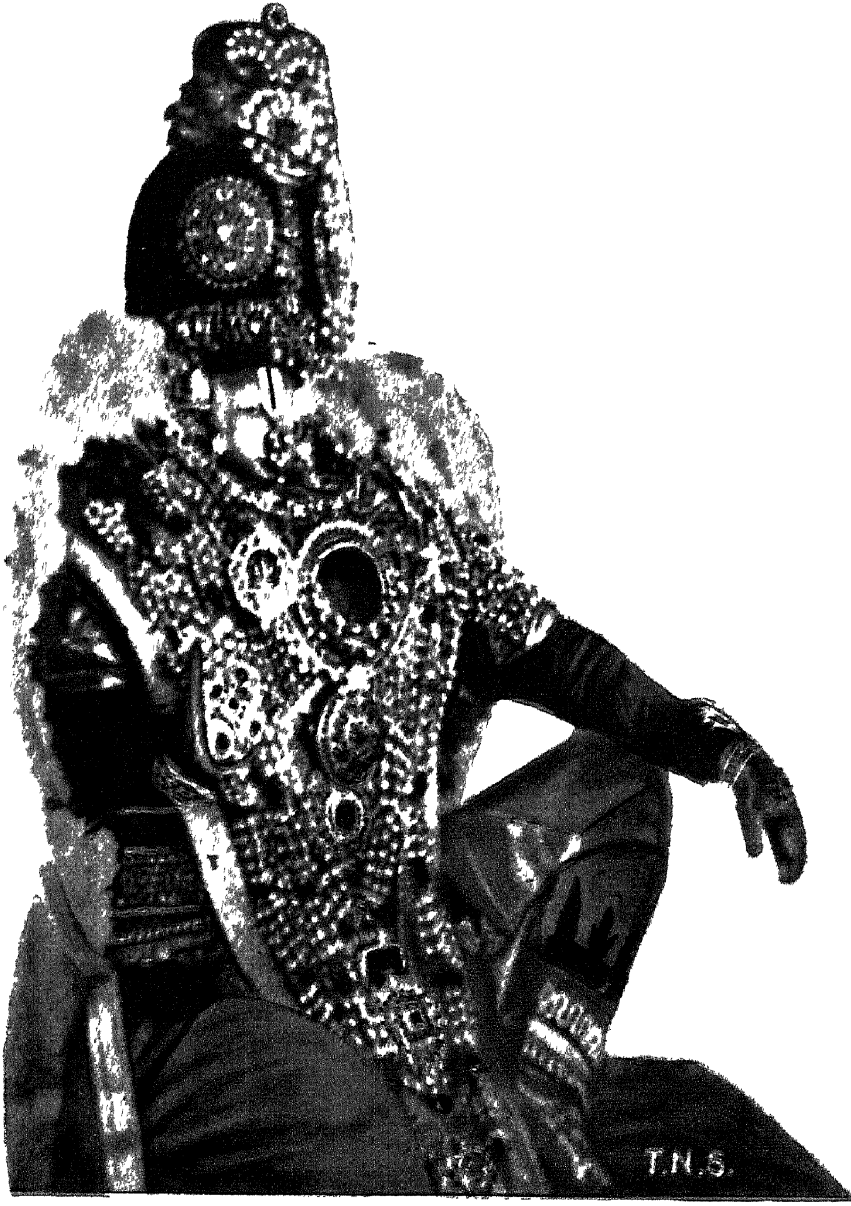
सर्वभूपाल वाहन

भगवान बालाजी का ब्रह्मोत्सव
तिरुमल

कार्यक्रम

दिनांक	वार	दिन के उत्सव	रात के उत्सव
२२–९–७९	शनिवार	——	सेनाधिपति का उत्सव, अंकुरार्पण
२३–९–७९	रविवार	तिरुच्चि उत्सव व ध्वजारोहण	बडा शेष वाहन
२४–९–७९	सोमवार	छोटा शेष वाहन	हंसवाहन
२५–९–७९	मंगलवार	सिंहवाहन	मोती के शामियाने का वाहन
२६–९–७९	बुधवार	कल्पवृक्ष वाहन	सर्वभूपाल वाहन
२७–९–७९	गुरुवार	मोहिनी अवतार	गरुड वाहन
२८–९–७९	शुक्रवार	हनुमान वाहन, शाम को वसंतोत्सव	गज वाहन
२९–९–७९	शनिवार	सूर्यप्रभा वाहन	चन्द्रप्रभा वाहन
३०–९–७९	रविवार	रथोत्सव	अश्व वाहन
१–९–७९	सोमवार	पालकी उत्सव, चक्रस्नान	ध्वजावरोहण

के नाम स्मरण से सभी तिरुमल पहाड गूँज उठते हैं। शायद उन्ही नारो से कलियुग वरद भगवान बालाजी वास्तव में तिरुमल पर विराज कर उस भक्तगण को अपने शुभाशीस प्रदान करते हैं। उस दिन भगवान के रथ को जो हजारों नारियल समर्पित करते हैं, उनसे बहनेवाले जल भक्तो को इस भ्रांति में डाल देता है मानो बालाजी के रथोत्सव के संदर्शनार्थ तथा भक्तगण को पुनीत बनाने स्वय सुरसरिता आकाश गंगा ही तिरुमल पर बह रही हो। असख्य भक्तो पर अपनी कृपा दृष्टि बरसाने भगवान बालाजी शाम तक उसी रथ पर विराजते हैं फिर रात को अश्ववाहन पर बालाजी की शोभायात्रा संपन्न होती है।

ब्रह्मोत्सव का नौवा दिन :-

यह दिन ब्रह्मोत्सव का अतिम दिन है जो अवभृथोत्सव के नाम से विख्यात है। अपनी देवियों सहित भगवान बालाजी की अलंकृत पालकी में शोभायात्रा सपन्न होती है। उस के बाद इन उत्सवमूर्तियो को भगवान वराह स्वामी के मन्दिर में स्थापित करते हैं जो स्वामिपुष्करणी के किनारे विराजमान है। वहाँ पर स्वामी का अभिषेक सपन्न होता है। लाखो यात्री पुष्करणी के चारोओर किनारे पर आकर इकट्ठे होते है और सुदर्शन चक्र को पुष्करणी में डुबाते ही वे भी उस पुष्करणी मे गोते लगाकर अपने को पूर्वसचित पापो से मुक्त तथा पुनीत समझ कर गोविन्द नाम स्मरण से पुलकित हो उठते है। इसी को अवभृथ स्नान कहा जाता है
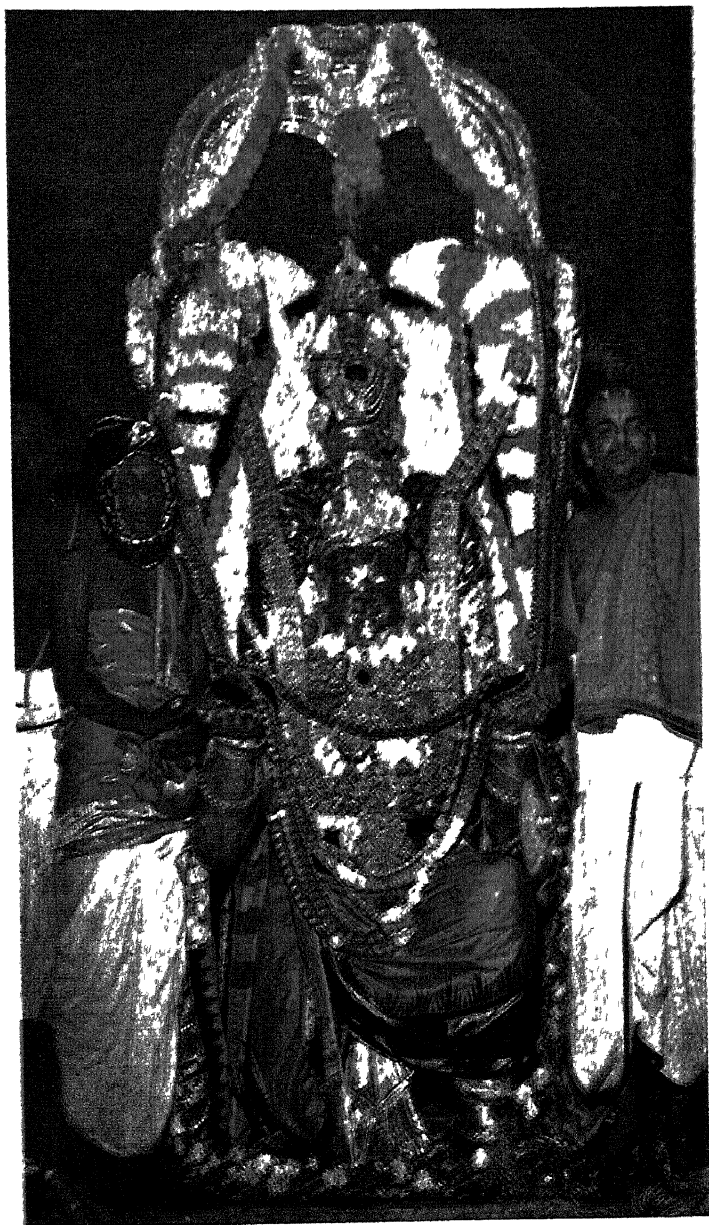
गरुड वाहन

और सभी भक्त पुष्करिणी से इस पवित्र 'तिरुमजनम्' जल को प्रसाद के रूप में घर ले जाते हैं। कई भक्त इस उत्सव के पूर्ण होने तक भोजन भी नहीं करते। इस उत्सव से ब्रह्मोत्सव की समाप्ति सूचित होती है। उत्सव मूर्तियों को सुवर्ण पालकी में विराजित कर मदिर में ले जाते हैं और 'ध्वजस्तभ' से 'गरुड ध्वजा' का अवरोहण किया जाता है। उस के बाद ब्रह्मोत्सव के

शुभ समाप्ति की सूचना के रूप में यात्रियों को मंगला-
क्षत बांटे जाते हैं ।

अतएव यह निश्चित कहा जाता है कि बालाजी जैसे नित्य कल्याणमूर्ति, महिमावान देवता,

गज वाहन
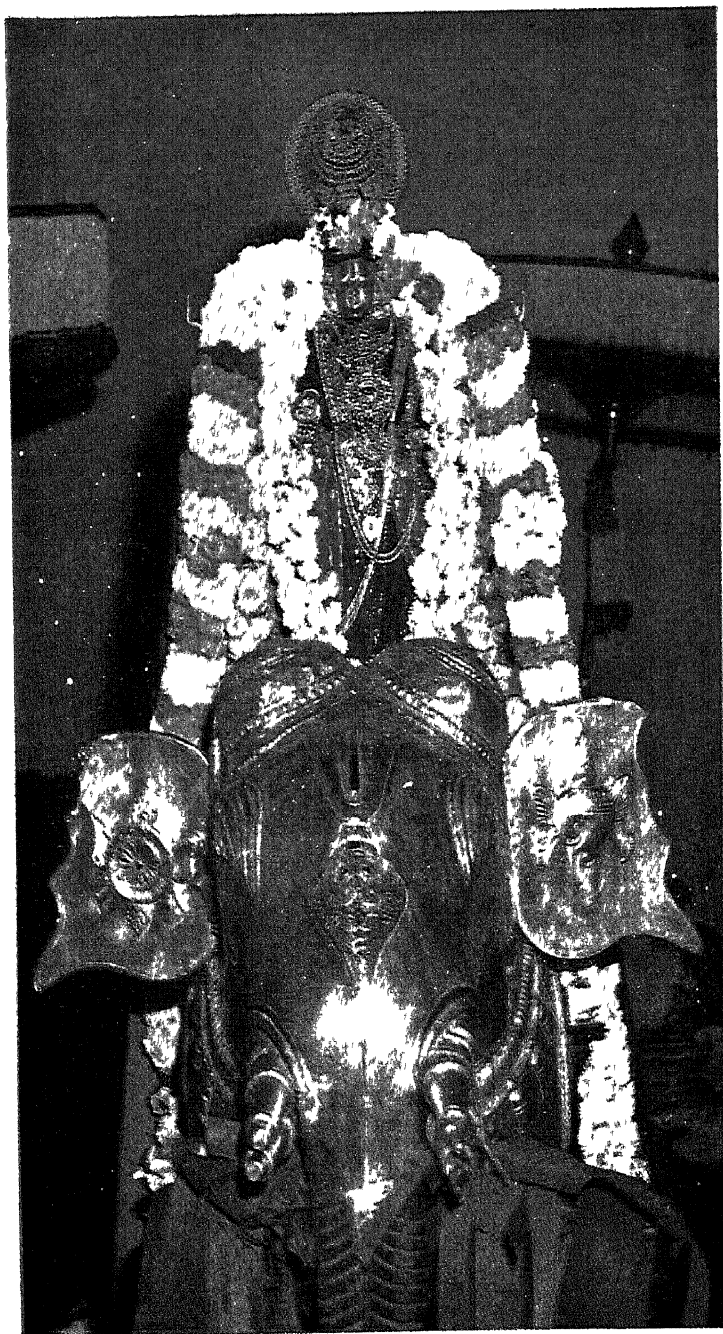
कलियुगवरद, भक्तजनहृदयमंदार, सर्वदेवताराध्य देवता तथा आये दिन हजारों भक्तों को अपनी ओर आकृष्ट करनेवाले वेङ्कटाद्रि जैसे पुण्यक्षेत्र भी तीनों भुवनों में नहीं प्राप्त होते —

"वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन ।
वेङ्कटेशसमोदेवो न भूतो न भविष्यति ॥"

हर तीन वर्षों में एक बार अधिक मास आता है। उस वर्ष में दो बार अर्थात् भाद्रपद तथा आश्वयुज महीने में ब्रह्मोत्सव सम्पन्न होते हैं । दूसरे ब्रह्मोत्सव को "नवरात्रि उत्सव" भी कहते हैं। उस उत्सव के आठवें दिन रथोत्सव के समय लकडी के रथ के बदले चांदी के रथ का उपयोग किया जाता है जो भक्तों को और भी अधिक आकृष्ट करता है ।

भगवान बालाजी नित्य कल्याणमूर्ति होने पर भी, तिरुमल पर आये दिन अनगिनत उत्सवों का आयोजन होने पर भी वहाँ पर ब्रह्मोत्सव के दिनों में विशेष महत्व रहता है । कई पुराणों ने ब्रह्मोत्सव के समय स्वामी के दर्शन प्राप्त होनेवाले अनेक शुभदायक वरदानों का उल्लेख किया है। अनेक भक्तों के अपने आंखों से देखे अनुभव प्रमाण के रूप में मिलते हैं जैसे कि कोई अंधा बालाजी की कृपा से देख सका, कोई गूँगा बोल सका इत्यादि ।

यदि बालाजी की इतनी महिमा नहीं होती तो आये दिन तिरुमल असंख्य भक्तों को अपनी ओर कैसे आकृष्ट कर सकते? यह भगवान बालाजी की कृपावृष्टि का कारण ही है ।

"अहमस्म्यपराधचक्रवर्ती करुणे त्वं च गुणेषु सार्वभौमी।
विदुषी स्थितिमीदृशीं स्वयं मां वृषशैलेश्वरपादसात्कुरु त्वम् ॥"

रामचरितमानस का प्रणयन

श्री मुनहरीलाल शर्मा, बी.ए., साहित्यरत्न
मानस प्रवक्ता.

रामचरितमानस एक दिव्य रचना है। ऋषि कवि महर्षि वाल्मीकि के अवतार वाग्देवता के विभव कविकुल तिलक गोस्वामी तुलसीदास जी मानस निर्माण के लिये अवतरित हुए थे। उनके निसर्गोज्ज्वल मानस में भगवान भवानीवल्लभ के प्रसाद से उनका रामचरितमानस दिव्य सहाय्य से आविर्भूत हुआ। यह उसी तरह हुआ जैसे ऋषियो के हृदय में तपस्या पूर्वक मन्त्र अवतरित होते है वे उनके दृष्टा एवं ऋषि कहलाते है। रामचरितमानस एक अपूर्व दिव्य प्रभाव रखता है। उसका प्रसाद और माधुर्य अलौकिक है, उसका प्रवाह अनवच्छिन्न है। उसमें वाग्देवी सूक्ष्मातिसूक्ष्म भावभङ्गियो को प्रगट करती हुई जिस कौशल से नृत्य कर रही है वह देखते ही बनती है। उसे देखते हुए दर्शकों और पाठको की दृष्टि की टकटकी बँध जाती है। और मानस का मानस, मानस में लीन हो जाता है। जिस ग्रन्थ का ऐसा दिव्य प्रभाव है उसकी रचना दैवी अतएव अमानवीय होगी, इसमें सन्देह ही क्या? मानुष मति प्रसूत रचना सिद्ध मन्त्र हो हो नहीं सकती है। उसका असर बुद्धि और मन के बहिरङ्ग तक ही होता है परन्तु दिव्य रचनाओ का क्षेत्र अन्तर्जगत होता है। श्रीरामचरितमानस का निर्माण बड़ी अलौकिक रीति से ए वं दिव्य शक्तियो की विशिष्ट आयोजना से उसका महान संगठन हुआ है। पूज्य गोस्वामी जी ने रामचरितमानस के अन्त में लिखा है—

यत्पूर्वं प्रभुणा कृतं सुकविना श्रीशम्भुना दुर्गमं।
श्रीमद्रामपदाब्ज भक्ति मनिशं प्राप्त्यै तु रामायणं॥
मत्वा तद्रघुनाथ नामनिरतं स्वान्तस्तम शान्तये,
भाषाबद्धमिदं चकार तुलसीदासस्तथा मानसम्॥ १॥

पुन्यं पापहरं सदा शिवकर विज्ञानभक्तिप्रदं।
मायामोहमलापहं सुविमल प्रेमाम्बुपूर शुभम्॥
श्रीमद्रामचरित मानस मिदं भक्त्या अवगाहन्तिये,
ते संसारपतङ्गघोर किरणैर्दह्यन्ति नो मानवाः॥ २॥

सर्वश्रेष्ठ कवि प्रभु भगवान शंकर ने श्रीमान रामचन्द्र जी के चरणो में अहर्निशि अविच्छिन्न भक्ति की प्राप्ति के लिये जिस दुर्गम रामायण का निर्माण किया था उसी रामायण को श्रीरघुनाथ के नाम में लगी जानकर अपने अन्तःकरण के अज्ञानान्धकार के शमनार्थ तुलसीदास ने राम चरितमानस के रूप में भाषा बद्ध किया॥ १॥

यह रामचरितमानस पुण्य स्वरूप, पापो का हरण करने वाला, सर्वदा कल्याणकारी, विज्ञान एवं भक्ति का दाता, माया मोह तथा मल का नाशक अत्यन्त निर्मल प्रेम वारि से परिपूर्ण और शुभ है। जो मनुष्य भक्ति पूर्वक इसमें स्नान करते है वे संसार रूपी सूर्य्य की प्रचंड (दुःख) किरणो से जलते नहीं तप्त नहीं होते॥ २॥

उपरोक्त दोनों श्लोको में निर्माता ने ग्रन्थ का स्वरूप उसका उद्गम तथा अपने निर्माण का अभिप्राय तथा ग्रन्थ का माहात्म्य बतलाया है। पूज्य गोस्वामीजी कहते हैं कि मैंने उस रामायण का जिसे भगवान शंकर ने निर्मित किया। जो रामायण अत्यन्त ही दुर्गम थी उस रामायण को श्रीरामचन्द्रजी के चरणो में अविच्छिन्न भक्ति की प्राप्ति के लिये, श्रीशिवजी ने बनायी थी को भाषामें बनाया। यथा—

रचि महेश निज मानस राखा।
पाइ सुसमउ सिवा सन भाषा॥(१–३५–११)

श्रीमहादेवजी ने इसे रचकर अपने मन में रक्खा रामचरितमानस शिवजी के हृदय में गुप्त रहा क्यो कि मन की बात कहने के योग्य कोई उपयुक्त सुपात्र मिला ही नहीं। मन की बात कोई चौराहे पर खडे होकर थोड़े ही कहता है किन्तु जब कोई अभिन्न रसिक मिल जाता है तब उससे कहना है। मानस का अर्थ मन की बात है। इसमें मानव की मानसिक समस्याओ का समाधान है। इतिहास का कहना और सुनना सरल है, किन्तु रामचरितमानस को एक विशेष मन स्थिति में समझा जा सकता है। जब तक समुचित वातावरण न हो तब तक कोई महत् वस्तु प्रभावशाली नहीं हो सकती। अतः शिवा सतीरूप में होने के कारण इससे वचित रहीं। जब दूसरा जन्म पार्वती रूप में लिया और देश, काल, परिस्थिति अनुकूल होने पर इसका प्राकट्य हुआ। यथा—

परम रम्य गिरिवर कैलासू।
सदा जहाँ शिव उमा निवासू॥
(१-१०५-८)

सिद्ध तपोधन जोगिजन सुर किन्नर मुनिबृन्द।
बसहि तहाँ सुकृती सकल सेवहि शिव सुखकंद॥ (१०५ वाल०)

शिवजी सदा के निवास स्थान पर गये जहाँ पर सुकृति पुण्यात्मा लोग रहते है पापी अधम नहीं—

हरिहर विमुख धर्म रति नाहीं।
ते नर तहँ सपनेहुँ नहि जाहीं॥ (१-१०६-१)

उस कैलाश पर्वत पर—

तेहि गिरपर बट बिटप बिसाला (१-१०६-२)
जो कि—

नित नूतन है

एवं—'त्रिविध समीर सुसीतलि छाया' है। उसके नीचे—

एक बार तेहि तरु प्रभु गयऊ॥ (१-१०६-४)
तब-तब-पार्वती भल अवसर जानी।

गई सम्भु पहँ मातु भवानी॥ (१-१०७-२)
उपरोक्त स्थान पर शिव और पार्वती उपस्थित होते है शिवजी—मूर्तिमान विश्वास है। तथा बटु भी—

बटु विश्वास अचल० इत्यादि। विश्वास भी है।

अतः बट की वृक्ष उनकी विश्राम स्थली है ऐसे बट वृक्ष की छाया में जिज्ञासा होने पर शिवजी ने पार्वतीजी को सुनाया। वही मानस गोस्वामी जी के हृदय में शिवजी की कृपा से अवतरित हुआ। उस दुर्गम रामचरितमानस को पूज्य गोस्वामीजी ने—

भाषा बद्ध करब मैं सोई।
मोरे मन प्रबोध जेहि होई॥ (१–३१)

भाषा में लिखा। जैसे ब्रह्मा ने मानस स्वर रचा और भगवान के नेत्रो से निकला जल इस में रक्खा उसी प्रकार शिवजी ने रचकर मन में

(शेष पृष्ठ २८ पर)

(पृष्ठ १६ का शेष)

भग १२० कवि इस काल में कृष्णभक्ति प्रदर्शक कृतियो की रचना में व्यस्त थे। व्रज-मण्डल के चारो ओर कृष्णभक्ति का प्रचार द्रुतगति से जनसाधारण में फैलकर उनमें संघटन और प्राचीन भारतीय सस्कृति के प्रति गौरव बढा रहा था। महाराष्ट्र में तुकाराम और एकनाथ कृष्णभक्ति के प्रचार कार्य में अग्रगामी थे। राजस्थान, दिल्ली, आगरा, गुजरात, आदि में ही नहीं, बगाल में भी इस भक्ति धारा का विपुल साहित्य निर्मित हुआ।

हिन्दी और कन्नड में जिस प्रकार आदि काल में साहित्य का उद्देश्य वीररस की अभिव्यक्ति को प्रधानता देता था, उसी प्रकार भक्तिकाल में भक्ति को लोकप्रिय बनाना साहित्य का लक्ष्य हुआ। हिन्दी के भक्ति-प्रधान-साहित्य में दो प्रधान शाखाएं लक्षित होती है। चौदहवीं और पन्द्रहवीं शताब्दी में रचित सूफी कवियो के प्रेमख्यान मूलतः इस्लाम को लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से रचे गये थे। किन्तु उन की शैली भक्तिकालीन कवियो के लिये नितान्त मार्गदर्शक बनी। कबीर, दाद आदि निर्गुणिया साधु-सन्त हिन्दू और मुसलमानों को निकट लाने के प्रयत्न में जिस साहित्य को अपनाकर भक्ति की महत्ता को जनप्रिय बनाने में व्यस्त हुए उस भक्ति धारा का नाम निर्गुण भक्ति-धारा है। निर्गुणभक्तिधार के अधिकांश कविज्ञान और प्रेम को मिलाकर अटपटी भाषा में अपने विचारो को प्रकट करते थे। साधारण जनता उनकी गहनता को समझने में असमर्थ थी। निर्गुणी सन्तो में अधिकांश अनपढ थे। साहित्यक दृष्टि से उन में विचारो की गहनता के अनुरूप काव्यविषयक सौन्दर्य का अभाव था। सूफियो और कबीर आदि भक्तो की साहित्यक कृतियाँ निर्गुण-भक्तिधारा के प्रेमाश्रयी और ज्ञानाश्रयी शाखाएँ कहलाती है। सगुण भक्ति-धारा की दो शाखाएँ है, राम भक्ति-प्रधान काव्य और कृष्ण-भक्ति प्रधान काव्य है। उत्तर भारत में श्री सम्प्रदाय के प्रधान आचार्य राघवानन्द जी से दीक्षित रामानन्द के बारह शिष्यो में रामनाम की महिमा का अत्यधिक प्रभाव था। रामानन्द के शिष्य, अनतानन्द, सुखानन्द, सुरसुरानन्द, नरहर्यानन्द, भवानन्द, पीपा, कबीर, सेन, रैदास, पद्मावती, सुरी आदि की कृतियों में राम-भक्ति की महिमा गायी गयी। कबीर आदि के राम दशरथ के पुत्र श्रीराम नहीं है। उनके अनुसार निर्गुण ब्रह्म का ही नाम राम है। उनके पश्चात् राम-महिमा का सजीवगान करनेवाले तुलसी दास सगुणाराधक थे। गोस्वामी तुलसीदास ने कर्म, ज्ञान और भक्ति में सामजस्य स्थापित किया। उनकी भक्ति का प्रधान गुण लोकसग्रह भी था। उनके साहित्य में जीवन के सभी पक्षों पर समान रूप से ध्यान दिया गया है जिसके फलस्वरूप उनकी कृतियो में अनेक लोक व्यापी समस्याओं का समाधान जनसाधारण को मिल सका है। रामचरितमानस, कवितावली, गीतावली, दोहावली, पार्वतीमंगल, विनय पत्रिका, बरवै रामायण प्रपत्तिरहस्य, वैराग्य-सदीपिनी, हनुमानबाहुक, रामज्ञाप्रश्न, रामललानहछू नामक बारह कृतियाँ गोस्वामी तुलसीदास से रचित मानी जाती है। केशवदास की रामचन्द्रिका और मैथली शरणगुप्त का साकेत भी रामभक्ति धारा के ही ग्रन्थ है। हिन्दी में सगुण भक्ति के प्रतिपादन में तुलसी रामायण के ही समान सूरदासकृत सूरसागर का भी उत्कृष्ट स्थान है। राम-भक्ति-धारा के ग्रन्थो मे हिन्दी तथा कन्नड में कृष्ण-भक्ति से सम्बन्धित ग्रन्थो का ही आधिक्य है।

वैष्णव भक्ति के द्वारा पन्द्रहवीं शती से सत्रहवीं शती तक साहित्य, सगीत, एवं दैव-भक्ति के द्वारा जनसाधारण में पिछली पाँच शताब्दियो में आसन्न निराशा, अशाति, निरभिमानता, सामाजिक तथा धार्मिक क्षेत्रो के प्रति निरुत्साह, नास्तिकता के भाव आदि विनष्ट हो गये। लोग आदर्शशील जीवन के पाठ सीखकर अपने जीवन को सत्य, शिव तथा सुन्दर बनाकर लौकिक जीवन में आध्यात्मिकता का आनन्द अनुभव करने लगे। आत्मा-विश्वास की प्राप्ति से भारतीयो के दार्शनिक विचार बदल गये गृहस्थाश्रम को बौद्धकाल से जो कलक लग गया था, बह वैष्णव भक्ति के प्रभाव से दूर हो गया। सभी आश्रमो में गृहस्थाश्रम ही सर्वश्रेष्ट समझा जाने लगा। कर्तव्य का निर्वहण ही श्रीमद्रामायण तथा भगवद्गीता में प्रतिपादित मुख्य उपदेश थे। आदर्शमय जीवन में व्यस्त होकर अपने कर्तव्यो के निर्वहण करते हुए लौकिक जीवन को आध्यात्मिक उन्नति के लिये साधन बनाकर ऐहिक जीवन को लोकोपयोगी सेवाओ में उपयोग कर उसे पुण्यकार्यों में लगाने के उत्तम उपदेश भक्ति-कालीन साहित्य से उनको प्राप्त हुए। परिणामतः पन्द्रहवीं शती से दिनोदिन समूचे भारत में रामराज्य कालीन सुखशान्ति जनता को पुन सुखी एवं संपन्न बनाने लगी।

(क्रमशः)

(पृष्ठ १४ का शेष)

संसार जो परमात्मा से आविर्भूत है, ब्रह्म ही जिसके उवादान और निमित्त कारण है, कभी मिथ्या नहीं हो सकता। इसलिये ससार को स्वप्न समझ कर अपने लौकिक जीवन की कभी, अवहेलना नहीं करनी चहिये। गायत्री लोक और परलोक, दोनो को सफल और सार्थक बनाती है हमारा लौकिक जीवन भी सुखी सम्पन्न और पवित्र रहे और मरने के बाद भी हम माया मंडल से मुक्त हो जायं। गायत्री अचिरादि मार्ग की ओर सकेत करती है, जिसका वर्णन उपनिषदों में और गीता में आया है।

अग्नि ज्योतिरहः शुक्लः षणमासा उत्तरायणम्। तत्रप्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म विदो जनाः॥ (गीता)

हमारा लौकिक जीवन भी ब्रह्म-ज्योति से ओत-प्रेत होना चाहिये और मरने के बाद भी हम परमात्मा को प्राप्त कर लें। गायत्री हमें लौकिक जीवन से विरक्त और उदासीन नहीं बनाती है—हमारे लौकिक जीवन को सुखी सम्पन्न और परिमर्जित करती है। गायत्री का सदेश है—पहले कर्म, तब भोग क (करो) तब ख (खाओ)। जो लोग कर्म किये बिना, उपार्जन किये बिना बाप दादे के कमाये धन से गुल छरे उड़ाते हे गायत्री उनका विरोध करती है। पाञ्चरात्र ग्रन्थो में लिखा हुआ है कि भगवत्-कैंकर्य तव भगवत् प्रसाद सेवन। जब तक मनुष्य कर्म नहीं करता, तब तक उसे भोग का अधिकार नहीं मिलता। यह ठीक है कि इच्छा स्थूल शरीर की माग है और इच्छा का सर्वथा दमन नहीं हो सकता, पर गायत्री को परमार्जित (sublimate) करने पर जोर देती है। शरीर का आहार अन्न है और इन्द्रियो का आहार भोग। शरीर को और इन्द्रियो को निराहार नहीं रक्खा जा सकता। पर भोजन पच गया, तो अमृत है, नहीं पचा तो जहर है। अपने शरीर और इन्द्रियो को उतना ही भोजन दीजिये, जो पच जाय और जो उनकी आवश्यकता हो। यह याद रक्खें कि दुनियाँ में आप भी है तथा अन्य लोग भी है। भोजन और भोग में केवल अपना हिस्सा लीजिये, दूसरे का हिस्सा मत हडपिये। गायत्री संकेत करती है—

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत ॥ *

(अनत सदेश की सौजन्य से)
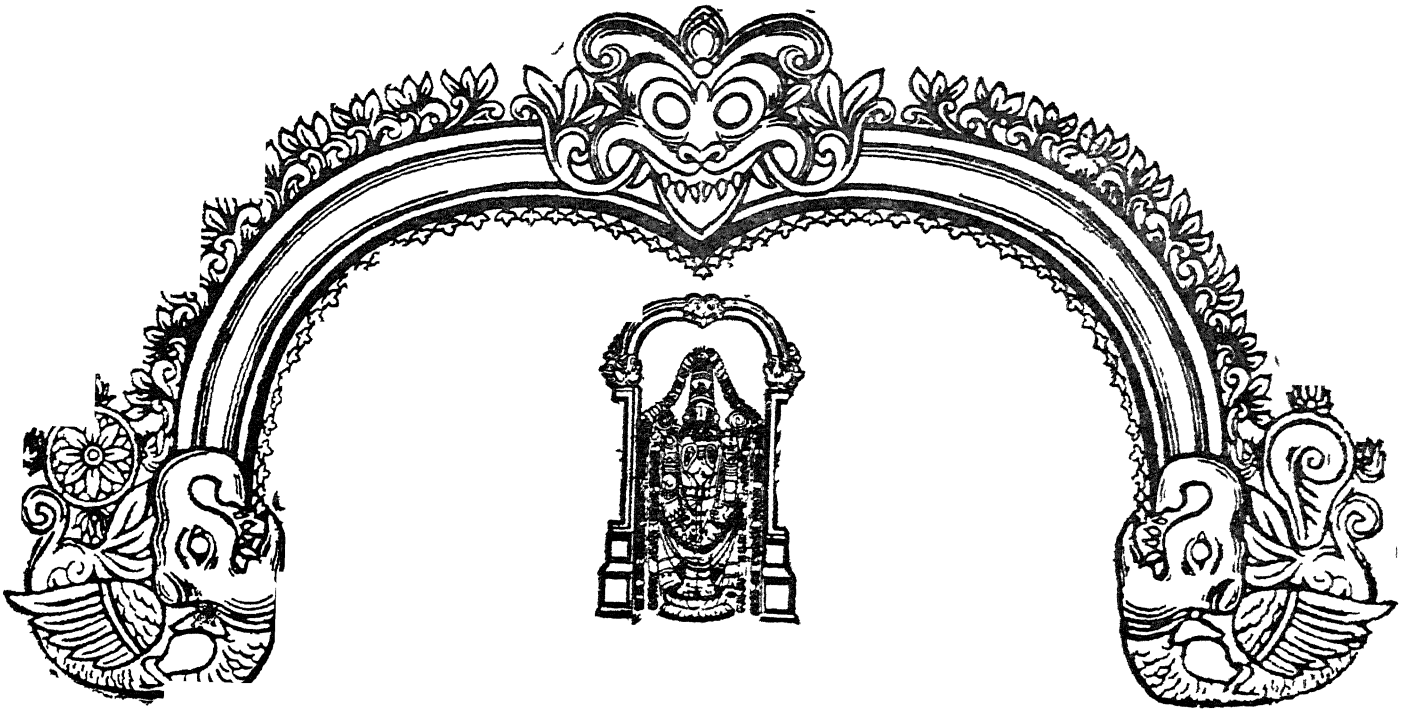
तिरुमल – यात्रियों को सूचनाएँ

भगवान बालाजी के दर्शन

ति. ति देवस्थान को यह विदित हुआ कि कुछ धोखेबाज व्यक्ति यात्रियों से पैसे लेकर भगवान के दर्शन शीघ्र ही करवाने का वादा कर रहे हैं

देवस्थान यात्रियों को विदित कराना चाहता है कि जहाँ तक संभव हो एक सयत एवं क्रम पद्धति में भगवान बालाजी के दर्शन कराने का भरसक प्रयत्न कर रहा है। प्रतिदिन दस हजार से अधिक यात्री भगवान बालाजी का दर्शन करने आते हैं और दर्शन की सुविधा केलिए दिन में १४ घंटे का समय मंदिर का द्वार खोल दिया जाता है जिस में ११ घटे सर्वदर्शन केलिए नियत है। यदि यात्रियों की भीड अधिक हो तो क्लोजड षेड्स से और अधिक न हो तो सुरक्षित महाद्वार से दर्शन का प्रबध किया जा रहा है।

वे यात्री जो समय के अभाव, अस्वस्थता अथवा अन्य किसी कारणवश क्यू में खडे नहीं सकते वे प्रति व्यक्ति रु २५/- मूल्य का टिकट खरीद कर मंदिर के अन्दर ही ध्वजस्तंभ के पास से क्यू में शामिल हो सकते हैं जिस से कि उन को ५ मिनट के अन्दर ही भगवान के दर्शन प्राप्त हो सके।

यात्रियों से ति. ति. देवस्थान का निवेदन है कि वे बाहरी व्यक्तियों की सहायता से दर्शन प्राप्त करने का प्रयत्न न करे। शीघ्र दर्शन की सुविधा केलिए ति. ति. देवस्थान के द्वारा जो उत्तम प्रबंध किये गये हैं, कोई कभी व्यक्ति भगवान का दर्शन उससे शीघ्रतर रवाने में असमर्थ है। अतः कृपया यात्रीगण ऐसे धोखेबाजों की झूठे वायदों से हमेशा सतर्क रहें।

भगवान के दर्शन प्राप्त करने में जो विलंब और प्रतीक्षा करने से जिस सहनशीलता का अभ्यास होता है, वह तो कलियुगवरद श्री वेंकटेश्वर के दर्शन प्राप्त करने केलिए अपेक्षित हो है और वह एक प्रकार की तपः साधना भी है जिस के द्वारा भगवान का संपूर्ण अनुग्रह प्राप्त होता है।

कार्यनिर्वहणाधिकारी,

ति ति. देवस्थान. तिरुपति.

देवस्थान के कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री पी वी. आर. के प्रसाद जी, आई.ए एस को करधे में बुनने के काम को सदर्शन करते हुए चित्र में देख सकते हैं।

श्री वेंकटेश्वर अनाथालय, अक्कारामपल्लि, तिरुपति।

देवस्थान के द्वारा कुष्ठ रोगियों का रक्षण

यहां के बनाये गये वस्तुओं को उन्हीं लोगो को ही भेंट करते हुए देवस्थान के कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री पी वि. आर के. प्रसादजी को चित्र में देख सकते है।

(पृष्ठ २५ का शेष)

रक्खा और हृदय में विचार कर इसका नाम रामचरितमानस रक्खा। काकभुशुण्डजीने भी यह रामचरितमानस—

रामचरित सर गुप्त सुहावा।
सम्भु प्रसाद तात मै पावा ।। (७-११३-११)

रामचरित मानस मुनि भावन।
विरचेउ सम्भु सुहावन पावन ।। (१-३५-८)

यह रामचरितमानस मुनिभावन अर्थात् शान्त रस से परिपूर्ण विरचेउ शम्भु से ईश्वर कोटि वालो का रचा हुआ है जो सुहावन अर्थात् मुमुक्ष को ज्ञान भक्ति प्रदायक है पावन का अर्थ विषयी जीवो को पवित्र करने वाला है। गोस्वामीजी—

वाल्मीकितुलसीदासौ भविष्येते कलौ युगे।
शिवेनात्र कृतो ग्रन्थः पार्वतीं प्रतिबोधितुम् ।।

रामभक्तिप्रवाहार्थं भाषाकाव्य करिष्यति।
रामायणं मानसाख्य सर्वसिद्धिकर नृणाम् ।।

के अनुसार-तुलसी के रूप में अवतरित हुए थे।

आत्माराम आप्तकाम भगवान शिव इस काव्य निर्माण के पचडे में पडे ही क्यो? उन्हे भी क्या लोक प्रशंसा चाहिये। ऐसी बात नहीं वे है परम राम भक्त। राघवेन्द्र सरकार की सतत् भक्ति की प्राप्ति के लिये उन्होने इसका निर्माण किया। वैसे शिवजी में भक्ति का अभाव नहीं है परन्तु प्रेमी को अपना प्रेम सदा अपूर्ण ही दिखाई देता है और भगवत भक्त अपने प्रभु का चरित्र निरन्तर चिन्तन करते ही रहते है। अपने निरन्तर चिन्तन के लिए भगवान शङ्कर ने इसका निर्माण किया। इसके द्वारा ये भक्ति-सुधा में तन्मय रहते है। उसीरामचरित मानस को गोस्वामीजी ने भाषा में लिखा। इस मानस के स्नान करने से साधारण मैल नहीं माया मोह रूपी मैल दूर होते है इसका जल अत्यन्त निर्मल है। पूरा भरा है। उस रामचरितमानस में जो भक्ति पूर्वक अवगाहन करेंगे अर्थात् सम्पूर्णभाव से तन्मय हो जायेंगे वे संसार रूपी सूर्य की प्रचण्ड किरणो से जलेंगे नहीं। अर्थात् जिसे सूर्य की धूप ने तपाया हो जो धूप में चलकर आया हो वह यदि स्नान करले तो तपन का नाश हो जाता है उसी प्रकार जो रामचरित-मानस में भक्तिपूर्वक स्नान करते है वे संसार

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

देखौ माई, दधि सुत मैं दधिजात
एक अचंभौ देखि सखी री, रिपु मै रिपु
जु समात।
दधि पर कीर, कीर पर पंकज, पकज के
द्वै पात ॥

इस पद की द्वितीय पंक्ति का अर्थ अधिकतर लोगो ने गलत लगाया है। प्राय लोग इसका अर्थ यो लगाते हैं—एक आश्चर्य यह भी है कि शत्रु को शत्रु ग्रस रहा है किन्तु आज आश्चर्य यही कि राहु को चन्द्रमा ग्रस रहा है। राहु से उनका अभिप्राय श्रीकृष्ण के हाथ से है, मेरी समझ में यहाँ हाथ के लिए राहु उपमान किसी भी प्रकार सार्थक प्रतीत नहीं होता, अपितु इसका अर्थ यो होना चाहिए—शत्रु में शत्रु समा रहे हैं। कमलवत् हाथो से चन्द्रतुल्य मुख का संयोग हो रहा है। स्मरणीय है कि चन्द्र और कमल परस्पर वैरी माने गये है, महाकवि सूरदास के पास शब्दो का अपार भण्डार था, उन्होने एक ही शब्द को किसी जगह किसी अर्थ में प्रयुक्त किया है तो वही शब्द दूसरी जगह कुछ अन्य अर्थ में। एक नमूना लें—

प्रात समै आवत हरि राजत
रतन जटित कुंडल सखि स्रवनन, तिनकी
किरन सूर तनु लाजत।
सातै रासि मेलि द्वादस मै, कटि मेखला
अलंकृत साजत ॥
पृथ्वी मथी पिता सो लेकर, मुख समीप
मुरली धुन बाजत।
जलधि तात तिहि नाम कंठ के, तिनकै
पंख मुकुट सिर भ्राजत ॥

इस पद के अंतिम चरण के अर्थ करने में प्रायः दूर की कौडी लाने की चेष्टा की गई है। स्व० चुन्नीलाल शेष ने लिखा है—जलधि तात, समुद्र का पिता आकाश रंग नील, उसमें कंठ मिला कर हुआ नीलकंठ=मोर। समुद्र का पिता आकाश किस आधार पर माना गया, यह स्पष्ट नहीं है। इसी प्रकार एक अन्य सूर-मर्मज्ञ ने इस पंक्ति का अर्थ यो किया है—जलधि=समुद्र के तात=पुत्र (समुद्र के पुत्र—विष) के समान (नीले गले वाले) मोर के पंख का मुकुट उनके सिर पर शोभा देता था। यहाँ सारी गडबडी का कारण नील का पर्याय विष का ठीक अर्थ न जानना है। सस्कृत के प्रसिद्ध आप्टे कोश में नील का विष अर्थ देखा जा सकता है, यद्यपि सूर के दूसरे विद्वान् ने जलधितात का अर्थ विष तो लगाया, पर नीले गले वाला अर्थ ठीक प्रतीत नहीं होता। होना यह चाहिए कि नील (विष) कठ=शकर, शकर का पर्याय विषकठ या नीलकंठ जो मयूर अर्थ में भी ग्रहण होता है।

सूरसागर में प्राप्त कूटो के अर्थ समझने में नाना प्रकार की भ्रान्तियाँ हुई है। कुछ भ्रान्तियाँ तो पाठो के हेर-फेर के कारण हुई है, कुछ अर्थ की ठीक पकड़ न रखने के कारण। सूर के अध्येता के लिए यह एक बड़ी समस्या है कि वह सूर के ऐसे विवादास्पद छदो के अर्थ को कैसे सुलझाएं? सत्य तो यह है कि कभी-कभी सामान्य लगने वाली पक्ति में भी ऐसी जटिलताएँ छिपी रहती है जिनकी हम कल्पना भी नहीं कर पाते। सूर के ऐसे पदों का अर्थ करते समय उनके अन्य समानार्थक प्रयोगो से जितना लाभ उठाया जा सकता है उतना अनावश्यक बादरायणसम्बन्ध स्थापित करके नहीं। नमूने के लिए सूर की एक पक्ति का अर्थ प्रस्तुत है—

ब्रज की कहि न परत हैं बातै।
० ० ० ०
मुक्ता-तात-भवन तै बिछुरै, मीन मकर
बिलसातैं।

यह 'सूरसागर' के अतिरिक्त, सूर के सौ कूट, सरदार कवि की टीका वाली साहित्य लहरी, भारतेन्दु द्वारा संकलित साहित्य लहरी, और वेंकटेश्वर प्रेस वाले सूरसागर में प्राप्त होता है; लेकिन इसकी पाँचवीं पंक्ति की टीका प्राचीन और नवीन किसी भी पुस्तक में शुद्धरूपेण नहीं लिखी गयी। इसकी पाँचवीं पंक्ति में प्रयुक्त 'मुक्ता तात भवन' के अर्थ भिन्न-भिन्न प्रकार से किए गये। सरदार कवि ने अपनी पुरानी टीका में लिखा है—"मुक्तातात जीवन ताते बिछुरत मगर मीन की रीति ते बिललाति"। इधर चुन्नीलाल शेष ने जो अर्थ किया है वह और ही विलक्षण है। उनका अर्थ जिज्ञासु सूर के प्रेमियो के समक्ष रखा जा रहा है—मुक्तातात=समुद्र, समुद्र भवन=जल, समुद्र का घर जल ठीक है अथवा मुक्तातात=सीपो उसका घर जल? यह निर्णय सहृदय-काव्यरसिको पर छोड़ा जाता है।

सूर के कूटो और कूटेतर पदों में कहीं - कहीं पुराण और ज्योतिष आदि की बातो का ऐसे चतुराई के साथ विनियोग हुआ है कि बिना उन्हें समझे अर्थ का अनर्थ हो जाना सहज-स्वाभाविक है। उदाहरण के लिए हम 'गोवर्धन पूजा' विषयक एक ऐसे पद की चर्चा करेंगे जिसके अर्थ और पाठ दोनो के सम्बन्ध में लोगो को भारी भ्रान्तियाँ हुई हैं—उक्त पद की कुछ पक्तियाँ यो है—

सुरगन सहित इन्द्र ब्रज आवत ।
धवल चरन ऐरावत देख्यौ उतरि गगन
तें धरनि धँसावत ।
अमरा-सिव रवि-ससि-चतुरानन, हय-गय
बसह-हस मृग जावत ॥
धर्मराज बनराज अनल दिव, सारद,
नारद, सिव-सुत भावत ।
भेढा, महिष, मगर, गुदरारो, मोर,
आखु, मन वाहन, गावत ॥

इस पद की तृतीय पंक्ति में अमरा की जगह लोगों ने 'अंबर' पाठ स्वीकार करके इसका अर्थ आकाश किया है और जितनी भी सवारियाँ उल्लिखित हैं, उनमें गय (गयद) को छोड़ दिया। यही नहीं, इसकी तीसरी और चौथी पक्ति के अर्थ में भी अटकल - पच्चियो से काम लिया गया है। इसका क्या अर्थ किया गया है, वह आपकी जिज्ञासा के लिए दे रहा हूँ— (ब्रजवासियों ने देखा कि) देवताओ को साथ लिए हुए इन्द्र उतरे चले आ रहे है। उन्होने देखा कि (इन्द्र का) धौला ऐरावत धरती धँसाता हुआ आकाश से उतरा चला आ रहा है। वे देवताओ की सवारियाँ गिनते जा रहे हैं कि आकाश में शिव अपने बैल पर, सूर्य अपने घोड़ो पर, चन्द्रमा अपने मृग पर, ब्रह्मा अपने हंस पर, धर्मराज अपने भैसे पर, बनराज (वन=जल, उसके राजा, वरुण) अपने मगर पर, अग्निदेव अपने मेंढे पर, नारद गुदरारे (पैदल), शिव के पुत्र स्वामि कार्तिकेय अपने मोर पर, गणेश अपने चूहे पर और शारदा अपने मन पर सवारी कसे चली आ रही है।

सूर की कूटात्मक शैली के पदो में जरा-सी भी सजगता खो जाने पर अर्थ का वास्तविक स्वरूप आपके हाथ नहीं लगेगा। ऊपर के पद में यदि अमरा का ठीक अर्थ समझा गया होता तो कदाचित् भटकाव की स्थिति न उत्पन्न होती। कोशों से तो सहायता मिलती नहीं, अतः जो कोशो का ही मात्र आधार ग्रहण करके चलते है, उनसे ठीक अर्थ जानने की आशा नहीं की जा सकती है। मेरा अनुमान है कि यहाँ 'अमरा' शब्द शची (इन्द्राणी) के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। अमरा के शची अर्थ की पुष्टि सूर की इस पक्ति से भी जाती है—

अमरापति चरननि तर लोटता ।
रही नहीं मन मैं कछु खोटत ॥

'अमरापति' शचीपति (इन्द्र) के अर्थ में आया है। अब सभी देवताओ की सँवारियो का हिसाब लग जाता है। शंकर की सवारी बैल, सूर्य का घोडा, चन्द्रमा का मृग, ब्रह्मा का हंस और शची की सवारी गयंद मानने मे हमें किसी भी प्रकार की दिक्कत नहीं होती। इस पद की चौथी और पाँचवीं पंक्ति के सम्बन्ध में काफी विचार करना पड़ा है। इन दोनो पंक्तियो का ठीक–ठीक अर्थ ग्रहण करने में सूर के मनीषियों को पर्याप्त कठिनाइओ का सामना करना पड़ा है, फिर भी अभी तक इसका शुद्ध अर्थ देखने को नहीं मिला।

(क्रमशः)

(पृष्ठ १० का शेष)

जब श्री कृष्ण खेलने में श्री दामा से हार गएतो वे रूठ कर बैठ गए। यह देखकर श्री दामा ने कहा कि खेलने में कौन बडा और छोटा, न तो तुम हम से जाति में बडे हो और न हम किसी तरह तुम्हारे आश्रित हैं। तुम अपना अधिक अधिकार इस लिए बताते हो कि तुम्हारे गाएँ अधिक है। जो खेलने में रूठता है उसके साथ नही खेलना चाहिए। यह कह कर सब सखा बैठ गए। परन्तु श्री कृष्ण को तो खेलने की इच्छा थी अत: उन्होंने नन्द की सौगन्ध खाकर दाँव देने का वचन दिया।

"श्याम सखा सों गेंद चलाई"

श्री कृष्ण अपने सखाओं के साथ यमुना के तट पर गेंद खेल रहे हैं। श्री कृष्ण श्री दामा की ओर गेंद फेंकी। श्री दामा ने मुडकर अपना अंग बचा लिया और गेंद काली दह में जा सिखी। तब श्री दामा ने दौड़कर श्री कृष्ण की फेंट पकड ली ओर कहा कि मेरी गेंद मँगा दो या स्वयं लाकर दो। मुझे अन्य मित्रों के समान मत समझो, मुझ से ढिठाई मत करो। तुमने जान-बूझ कर गेंद यमुना में फेंक दी। अब तो देनी ही पडेंगी। सब सखा आपस में हँसते हैं कि अच्छा हुआ श्री कृष्ण ने गेंद खो दी।

"फेंट छांडि मोरि देहु श्री दामा"

श्री कृष्ण ने कहा ·

श्रीदामा, मेरी फेंट छोड दों, थोडी सी बात के लिए तुम क्यों झगडा करते हो। अपनी गेंद के बदले मेरी गेंद ले लो। तुमने दौडकर मेरी बाँह क्यों पकडली? तुम छोटे बडे का विचार नहीं करते, बराबरी का दावा करते हो।"

श्रीदामा ने कहा :

ठीक है तुम बडे नन्द के पुत्र हो। मैं तुमहारी बराबरी कैसे कर सकता हूँ। तुम बडे धूर्त हो। गेंद तो तुम्हें देनी ही पडेगी।

इसी प्रकार के अनेक पद सूरदास ने रचे है। यथा

"सखनि संग हरि धेंवत"
"खेलत श्याम सखा लिए संग।"
"तो सों कहा धुताई करि हों।"
आदि

उकत क्रीडाओं की उद्भावनाएँ समत्त्व की चरितार्थता व्यक्त करने के लिए ही प्रस्तुत की गई हैं।

श्री वेङ्कटेश्वरस्वामीजी का मंदिर, तिरुमल.

अर्जित सेवाओं की दरें

विशेष दर्शन ... रु. 25—00

सूचना — एक टिकट के द्वारा एक ही दर्शनार्थी भगवान के दर्शन प्राप्त कर सकेगा ।

I. सेवाएं :—

१. अमत्रणोत्सव	रु	200	७ जाफरा बरतन (Vessel)	रु	100
२. पूलगि		60	८ सहस्रकलशाभिषेक		2500
३ पूरा अभिषेक		450	९ अभिषेक कोइल आलवार		1745
४. कर्पूर बरतन (Vessel)		250	१० तिरुप्पाबडा		5000
५ पुनुगु तेल का बरतन (Vessel)		100	११. पवित्रोत्सव		1500
६ कस्तूरि बरतन (Vessel)	.	100			

सूचना – सेवासख्या १ — इस सेवा में दो व्यक्ति ही दर्शन प्राप्त कर सकेंगे । जिस दिन प्रात· काल तोमाल सेवा और अर्चना की है केवल उसी दिन रात में एकान्तसेवा के लिए भी भक्त दर्शनार्थ जा सकते हैं ।

सेवा क्रमसख्या २–यह सेवा केवल गुरुवार की रात को मनायी जाती है । केवल 2 व्यक्ति ही दर्शन पाप्त कर सकेंगे ।

सेवा क्रमसख्या ३–७ — केवल शुक्रवार को मनायी जाती है । इन सेवाओ के लिए प्रवेश इस प्रकार होगा —

क्रमसख्या ३ – बर्तन के साथ केवल २ व्यक्ति ।
४ – बर्तन के साथ केवल २ व्यक्ति ।
५ – ७ – बर्तन के साथ केवल एक व्यक्ति ।

सेवा क्रमसख्या ८ – १० – प्रत्येक सेवा सम्पूर्ण दिन का उत्सव है । सेवा करानेवाले भक्त को प्रसाद दिया जायगा, जिस में बडा, लड्डू, अप्पम दोसा इत्यादि होंगे । इस के अतिरिक्त सेवा न. ८ के लिए वस्त्र भी भेंट के रूप में दिया जायगा । सहस्र कलशाभिषेक, तिरुप्पाबडा तथा पवित्रोत्सव सेवाओ में हर एक सेवा को १० व्यक्ति जा सकते हैं ।

साधारण सूचना.–रिवाजो के अनुसार · दातम (Datham) और आरती के लिये एक रुपये का अतिरिक्त शुल्क अदा करना पडेगा ।

II. उत्सव .—

१ वसन्तोत्सव	रु	2500	४. प्लवोत्सव	रु	1500
२. कल्याणोत्सव		1000	५ ऊँजल सेवा	.	1000
३ ब्रह्मोत्सव	.	750			

सूचना – १ **वसन्तोत्सव :–** जो भक्त वसन्तोत्सव मनाना चाहते हैं उनकी सुविधा के अनुसार और मंदिर की सुविधा के अनुसार यह उत्सव तीन दिन अथवा उससे कम दिनों में मनाया जायगा और उन्हे वस्त्र पुरस्कार मिलेगा ।

२ **ब्रह्मोत्सव :–** इस उत्सव को जो यात्री मनाना चाहते हैं अपने साथ ६ साथियों को ला सकते है, तथा तामालसेवा, अर्चना और रात को एकान्तसेवा में भाग ले सकते हैं। यह उत्सव तीन दिन तक अथवा उससे कम दिनो में यात्री की सुविधा के अनुसार और मंदिर की सुविधा के अनुसार मनाया जायगा । उत्सव के दिनो में उस के मनानेवाले को पोंगल और दोसा इत्यादि प्रसाद भी दियें जायेंगें । उत्सव के अन्त में वस्त्र पुरस्कार दिया जायगा ।

३ **कल्याणोत्सव या श्रीस्वामीजी के विवाहोत्सव** के अन्त में वस्त्र पुरस्कार और लड्डू, बडा, पापड, दोसा आदि नियमानुसार प्रसाद के साथ दियें जायेंगे ।

III वाहन सेवाएं :–

१ वाहन सेवा सर्वभूपाल वज्रकवच सहित ७२+१ (आरती)	रु	73
२ वज्रकवचसहित वाहनसेवा स्वर्ण गरुडवाहन, कल्पवृक्ष, बडा शेषवाहन, सर्वभूपाल, सूर्यप्रभा, प्रत्येक ६२+१ (आरती)	..	63
३ चांदी गरुडवाहन, चन्द्रप्रभा, गज (हाथी) वाहन, अश्ववाहन, सिंहवाहन, हंसवाहन, प्रत्येक ३२+१ (आरती) ..	..	33

सूचना .– वाहनसेवा मनानेवाले गृहस्थ को प्रसाद में एक बडा दिया जायगा ।

साधारण सूचना :– न. ३ और ४ के लिये दातम और आरती के लिये समय और रिवाजानुसार एक एक रुपये का अतिरिक्त शुल्क अदा करना होगा ।

IV भगवान को प्रसाद (भोग) समर्पण (१/४ सोला) :–

१. दहीभात	रु.	40	४ शक्करपोंगलि	रु	65	७ शक्करभात	रु.	85
२. बघार भात	..	50	५. केसरीभात	...	90	८. शीरा	...	155
३ पोंगलि(घी और मिर्चभात)		55	६. पायसम (खीर)	...	85			

सूचना :—भोग के बाद प्रसाद भक्त को दिये जायेंगे । भोग के बाद अपने प्रसादो को भक्त लोग आकर अपने बर्तन में स्वीकार करेंगें ।

V. पक्वान्नो की भेंट :—

१. लड्डू	रु.	450	४ दोसै	रु	100	७ सुखी	रु	200
२ बडा	..	250	५ पापड		230	८ जिलेबी		450
३ पोली	.	225	६ तेनतोल	..	200			

सूचना —जो गृहस्थ उपर्युक्त पक्वानो की भेंट देते हैं उन्हे भोग के बाद ३० पनियारम दियें जायेंगे । प्रसाद-पन्यारम को गृहस्थ स्वयं आकर मन्दिर से ले जा सकते हैं । भोग के बाद मन्दिर की दूसरी घंटी बजते ही प्रसाद पन्यारम दिया जायगा ।

VI. नित्य सेवाएं :—

१ नित्य कर्पूर हारती रु. 21   २. नित्य नवनीत आरती रु. 42   ३ नित्य अर्चना रु 42

सूचना :—नित्य सेवाओ के लिये प्रथम वर्ष में अतिरिक्त रूप से देय शुल्क वर्ष के पहले हर एक सेवा के लिए अग्रिम के रूप में देना पडेगा । जो भक्त इन नित्य सेवाओ को मनाते हैं उनको भगवान के दर्शन केलिए प्रवेश नही मिलेगा । भक्तों की अनुपस्थिति में ही उनके नाम पर इन सेवाओ को सपन्न किया जायगा ।

(पृष्ठ २७ का शेष)

रूपी सूर्य प्रचण्ड किरणो से जलते नहीं। अर्थात् दुखी से विश्राम पाकर परम शान्ति लाभ प्राप्त करते है। यह रामचरितमानस।

'तन, मन, धन सन्तन को सरबस' है।

अर्थात् ससार में किसी भी देश प्रदेश द्वीप-द्वीपान्तर में जितने सन्त हुए है या होने वाले है सबका सर्वस्व जीवन प्राण मुरदो को जिलाने वाले उपदेश मानस में सन्निविष्ट है। जैसे बट वृक्ष के बीज में सम्पूर्ण वृक्ष सूक्ष्म रूप मे समाया हुआ है उसी तरह मानस में चारो वेद छहो शास्त्र तथा अठारहो पुराण एव सभी ग्रन्थो का रस मानव में विद्यमान है। रामचरितमानस हमारा सञ्जीवन अमृत है एवं कल्पतरु है।

परिपूर्ण मानव की साधना के लिए रामचरित मानस एक अद्वितीय ग्रन्थ है। इस मानसामृत गङ्गा मे गङ्गा के समान हमारे मन को धोकर निर्मल कर देने की शक्ति है। किसी उर्दू कवि के शब्दो में—

राय यह मेरी नहीं फतबा सारी कौम का।
तेरी (तुलसी की) रामायण नहीं नगमा सारी कौम का।।

वास्तव में रामनारायणदत्त शास्त्री जी के शब्दो में—

वह मानस है जहाँ पाप ताप का,
नेक नहीं चलता वश है।
यहाँ नौ रस है रस एक वहाँ,
यह बानी है सन्तो की पानी नहीं।।

मल धोया करे कहीं भी तन का,
मन का मल तो धुलता है यहीं।
इस रामचरित्र के मानस की,
उस मानस से तुलना है कहीं।।

वहाँ डूबता तो मर जाता यहाँ,
डूबता तो तर जाता वहीं।।
किं बहुना—

अस्ति यद्यपि सर्वत्र नीर नीरजमण्डितम्।
रमेते न राजहंसस्य मानस मानस बिना।।

संसार की दिव्य विभूति रामचरितमानस और मानसकार के चरणों में दास का शतनुशत प्रणाम। ✡

आनिवर आस्थान के अवसर पर देवस्थान के कार्यनिर्विहणाधिकारी श्री पी. वी आर. के. प्रसादजी, आई. ए. एस को सर्कार मुहर सहित सत्कार तथा स्वामीजी के शुभासीस प्राप्त करते हुए चित्रों में देख सकते हैं।

ऊर्ध्वपुण्ड्र (तिलक)

एक साधक
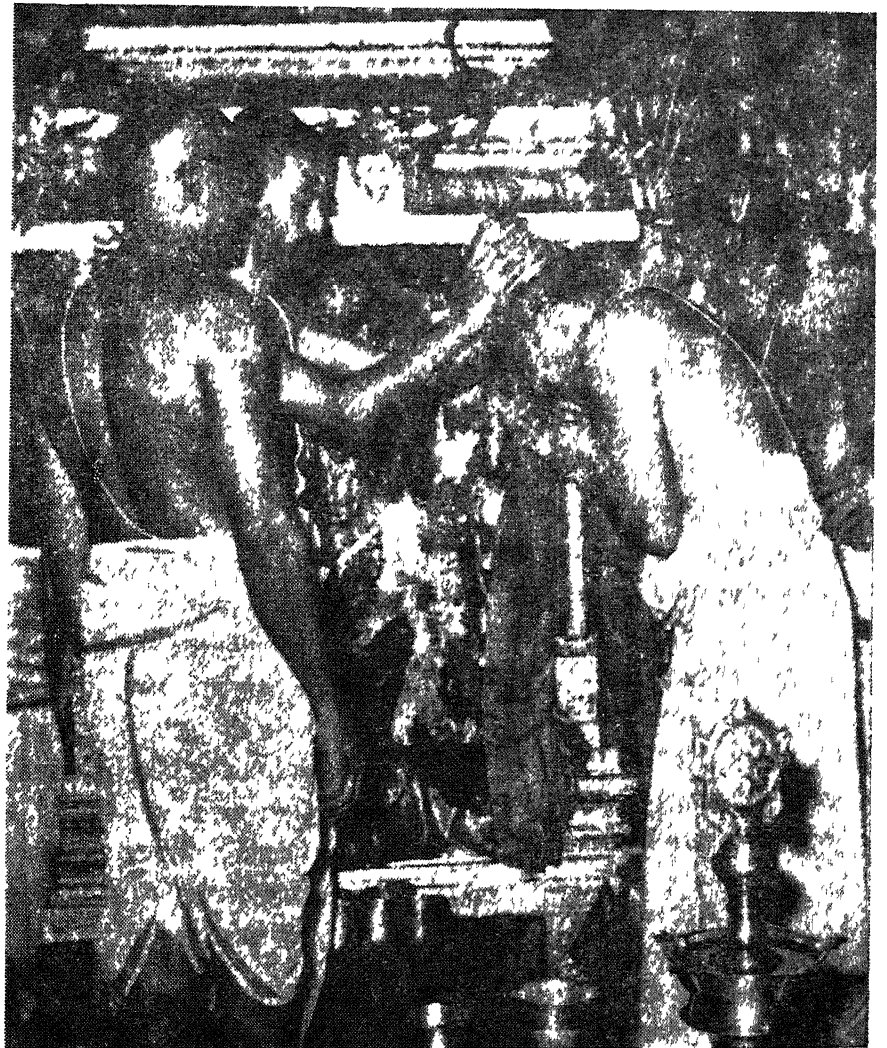
मनुष्य को मस्तक भाग इसी लिये मिला है कि वह भगवान को प्रणाम करे। भक्तो, वृद्धजनो गुरुजनो को प्रणाम करे और उनके माध्यम से भगवान तक अपनी प्रणाम पहुँचाये। भगवान श्रीकृष्ण को किया गया एक प्रणाम भी अपुनर्भव का कारण होता है। कहा भी है 'एकोऽपि कृष्णस्य... कृष्ण प्रणामीन पुनर्भवाय ।।'

मनुष्य जिस मस्तक से श्रीकृष्ण के चरणो में प्रणाम करता है यदि उसी पर श्रीहरि के उन चरणो को धारण कर ले तो वह प्रभु का अत्यन्त प्रिय हो जाता है और नारायण का प्रिय पात्र बन जाना ही तो सम्पूर्ण पुण्यो का फल है। श्रीहरि के चरण इतने श्रेयस्कर हैं। श्रीचरणो के स्पर्श मात्र से गंगाजी पाप प्रमोचनी शक्ति से युक्त एव भुक्ति मुक्ति प्रदायिनी हो गई। इसलिये श्रीहरि चरणो की आकृति स्वरूप तिलक को मस्तक पर धारण करना श्रेष्ठ हरिजन होकर सम्पूर्ण श्रेयोभाजन हो जाना है।

भगवान के चरणो में प्रणाम सभी जाति के लोग करते हैं। वैष्णवजन तो हरिपादाकृति को अपने ललाट पर धारण कर, नमन के केन्द्रो को शिरोधार्य करते है यह सूचित करते हैं। मस्तक पर इडा और पिंगला को नाडियो का स्थान है। ये नाडियाँ ज्ञान, श्रद्धा विश्वास विवेक को जागृत करने वाली है, इनको शान्त, शीतल तथा प्रभु परायण बनाने के लिये भी सिर परहरिचरणाकृति ऊर्ध्वपुण्ड्र को धारण करना आवश्यक है।

संसार में पृथक् दलों सेनाओं के पृथक् ध्वज या चिह्न होते हैं। नारायणी सेना भगवद्भक्तो का चिह्न हरिपादाकृति ऊर्ध्वपुण्ड्र दूर से यह ज्ञात करा देता है कि यह कोई नारायण का दास श्री वैष्णव है। अतएव भगवद्भक्तोको ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण करना चाहिये। इससे शरीर शुद्धि भी हो जाती है। मुमुक्षु जनो का परिचायक चिह्न विशेष भी इसे कहा जाता है। हरिसेवकों को तिलक लगाना परमावश्यक है।

श्रीवैष्णवो के तिलक में भगवच्चरणो के मध्य श्रीदेवी का भी निवास है। हरिद्राचूर्ण से दीपशिखा के समान या वाँसवृक्ष के पत्ते की आकृति में श्रीदेवी को मस्तक पर चरणो को मध्य धारण करना चाहिये ये ऊर्ध्वपुण्ड्र केवल मस्तक पर ही नहीं शरीर के बारह स्थानो पर लगाये जाते हैं और उनमें श्रीदेवी सहित भगवच्चरणो का आवाहन करके उन्हे प्रणाम करने का विधान है। इस प्रकार वैष्णव के शरीर रूपी पुर म द्वादश हरिमन्दिरो को स्थापना हो जाती है और वह स्वय भगवद् धाम बन जाता है। ऐसा श्रीवैष्णव जो भगवान के धाम को भी धारण करता है वह निश्चय ही ससार से मुक्त हो जाता है।

श्रीवैष्णवो को भागवत कहा जाता है अर्थात् ये मुमुक्षु होते हैं। इनके द्वारा ऊर्ध्वपुण्ड्र यज्ञोपवीत की तरह नियमतः धारण किया जाता है। इस विषय में अनेक प्रमाण मिलते हैं—

सर्ववर्णेषु मद्भक्ता कुर्वीरन्नूध्वपुण्ड्रकम् ।
ब्राह्मणाश्च विशेषेण जपमोहमपरायणाः ।।
किमत्रोक्तने बहुना धारयेद्दूध्वपुण्ड्रकम् ।
यो न धारयते मर्त्यो मामकं चिह्नमोदृश ।
तं त्यजामि दुरात्मन मदीयाज्ञातिलकं धिनम् ।
तस्मान्मा प्राप्तुमिच्छद्भिर्वैष्णवैंतिकमलायैः ।
ऊर्ध्वपुण्ड्रमिद धार्य सद्य समारोचनम् ।
(ब्रह्माण्ड पुराण)

प्रत्येक वर्ण में प्रभु परायणो को हरिचरणाकृति तिलक धारण करना चाहिये। जप होम आदि के समय ब्राह्मणो को विशेष रूप से धार्य है। जो इस प्रकार तिलक धारण नहीं करता प्रभु उसे स्वीकार नहीं करते हैं। निर्मल हृदय वैष्णवो के द्वारा संसार मोचक इस ऊर्ध्वपुण्ड्र को अवश्य धारण करना चाहिये।

पवित्रो के सम्बन्ध से मनुष्य पवित्र होता है और अपवित्रो के सम्पर्क से अपवित्र यह निश्चित नियम है। भगवच्चरण तो पवित्रो को भी पवित्र करने वाले हैं। उनके सविधि धारण करने से मनुष्य भी पावन बन जाता है और प्रभु के पावन धाम का अधिकारी हो जाता है। अतः शुद्ध सत्व सम्पन्न शुक्ल मृत्तिका जोकि श्रीरङ्गम् वेंकटाद्रि, चित्रकूट, वृन्दावन धाम विशेष की अर्थात् भूदेवी की हो उसे श्री सहित धारण करना चाहिये कहा भी है—

मत्प्रियार्थ शुभार्थ वा रक्षार्थ वाचतुरानन् ।
मदभक्तो धायेरन्निमूर्ध्वपुण्ड्रमत

वैष्णव को आलस्य रहित हो, शुभ तिलक को धारण करना चाहिये। इसके धारण करने से ज्ञात होता है कि इस भक्त को भगच्चरण अतिशय प्रिय है। यह तिलक सुन्दर रूप में वानप्रस्थ, सन्यासी सभी को धारण करने चाहिये।

ब्रह्मचारी गृहस्थो वा वानप्रस्थोऽथवा यति. ।
अवश्य धारयेत्पुण्यमूर्ध्वपुड्र सुशोभनम् ।।
ऊर्ध्वपुण्ड्रमृजुः सौम्य ललाटे यस्य दृश्यते ।
चाण्डालोऽपि विशुद्धात्मा पूज्य एव न सशयः।।

जिसके ललाल मे सुन्दर ऊर्ध्वपुण्ड्र हो वह चाण्डाल भी विशुद्धात्मा और पूज्य है। इसमें संशय नहीं है। पावन करने की शक्ति तो हरि के चरणो में है। हाड़ जाम के शरीर में नहीं। भगवान ने स्वय कहा है—

विद्या विनयसम्पन्नाः ब्राह्मणा. वेदपारणा ।
मयि भक्ति न कुर्वन्ति चाण्डालसदृशा हि ते।।

विद्या विनय से सम्पन्न वेद पारङ्गत ब्राह्मण होने पर भी यदि हरि भक्ति विहीन है तो वह चाण्डाल सदृश ही है। यह तिलक विधिपूर्वक धारण किया जाता है –

धृतोर्ध्वपुंड्रो विधिवन्नामानि द्वादश न्यसेत् ।
नमोन्तान्यञ्जलिं कुर्यान्नामान्युक्त्वा यथाक्रमम्
(पारमेष्ठ्यसहिता)

बारह स्थानों पर धारण कर 'केशवायनम' आदि बारह मन्त्रो से अन्त में अञ्जलि बाधकर प्रणाम करे। ऊर्ध्वगति चाहने वाले को यह आवश्यक है।

ऊर्ध्व गत्या हि यस्येच्छा तस्योर्ध्वपुण्ड्रमुच्यते।
ऊर्ध्व नयति यत् पुण्ड्र प्राणिन पापकारिणः।।

तस्याख्या ह्यूर्ध्वपुण्ड्रेति तस्मात्तद्धारयेद् बुधः

पापकारी को भी ऊर्ध्वगति देने के कारण इसे ऊर्ध्वपुण्ड्र कहते हैं। इसके करने से वैदिक कार्य भी साङ्ग होते है नहीं तो वे अपूर्ण ही रह जाते हैं। कहा भी है—

ऊर्ध्वपुड्राङ्कितो मर्त्यो यत्कुर्यात्कर्म वैदिकम् ।
तत्सर्वं सफलं तस्य भवत्येव न संशयः ।।

(शेष पृष्ठ ३६ पर)

भक्ति-रस की प्रधानता

जब ईश्वर में निष्ठा होती है, जब ससारासक्ति लुप्त हो जाती है, तभी मन शान्त होता है। शान्तरस भक्ति का प्रथम सोपान है। परमेश्वर परम ब्रह्म परमात्मा हैं—यह ज्ञान भक्त के चित्त में शान्तरस में उदय होता है।

दास्यरति मे भक्त के मन में ममता का सचार होता है। वह भगवान् की सेवा करने में व्यस्त होता है। श्रीकृष्ण—सेवा के सिवा उसको और कुछ अच्छा नही लगता। वह भगवान् से कुछ भी कामना नही करता केवल उनकी सेवा करना चाहता है।

सख्यरस का प्रधान लक्षण यह है कि भक्त के सामने भगवान् की अपेक्षा और कोई प्रियतर नही होता। गुहराज कहते हैं—'पृथ्वी पर राम की अपेक्षा कोई मेरा प्रियतर नही।' •जो भक्त प्राणों के भीतर भगवान् के साथ क्रीड़ा करता है, वही सख्य-रस की माधुरी का उपभोग कर सकता है। सख्यरति में भक्त भगवान् को अपना अलङ्कार बना लेता है। बृन्दावन मार्ग में अन्ध बिल्वमङ्गल के पथ—प्रदर्शक श्रीकृष्ण बलपूर्वक जब उसका हाथ छुडाकर चले जाते हैं। विल्वमङ्गल कहते है।

हस्तमुत्क्षप्य यातोऽसि बलात् कृष्ण किमद्भुतम्।
हृदयात् यदि निर्यासि पौरुषं गणयामि ते॥

'श्रीकृष्ण! तुम बलपूर्वक हाथ छुडाकर चले जाते हो, इसमें आश्चर्य क्या है? हृदय से यदि तुम दूर हो सको, तब मै जानूँ कि तुम्हारे में बल है।' भक्त ने अपने सखा को सर्वथा हृदय का अलङ्कार बनाकर बाँध रक्खा है। अब भगवान् लिये भागने का रास्ता नहीं है!
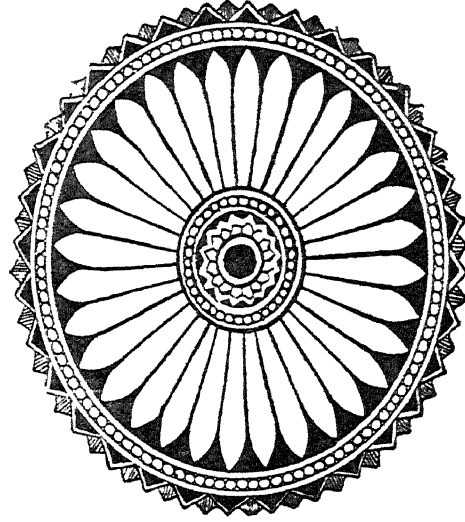
वात्सल्य—रस में भगवान् गोपाल है। भक्त उनको पुत्र के समान प्यार करता है, स्नेह करता है, गोद में ले लेता है माता यशोदा के सामने भगवान् गोपाल—वेश में उपस्थित होकर प्रेम भिक्षा करते थे, वह उनको थोडा-सा प्रेम दिखलाकर फिर विमुख कर देते थे। फिर यदि वह अन्तर्हित हो जते थे तो गोपाल के वियोग में भक्त अनुताप से छटपटाने लगते थे।

प्राणों में मधुर रस का सचार होने पर—'सती जैसे पति के सिवा दूसरे को नहीं जानती'—भक्त भी उसी प्रकार भगवान् के सिवा और किसी को नही जानता। इस अवस्था में भक्त और भगवान, सती और पति हैं। महाप्रभु श्रीचैतन्य इसी भाव में वेसुध ही गये थे। चैतन्य और भगवान् राधा और श्रीकृष्ण है। जीवात्मा और परमात्मा हैं। जो इस मधुरस में डूब गया है उसके फिर बाहर के धर्म—कर्म नहीं रह जाते। वह 'वेदविधि छोड चुका।' पागल हाफिज ने इसी कारण अपने शास्त्रोक्त कर्म—काण्ड का त्याग कर दिया था। वृन्दावन की गोपिकाओं का काम-गन्धहीन प्रेम मधुर रस का परम आदर्श है।

इस रस के आवेश में प्राण में किस भाव का उदय होता है। यह हम क्या जानें? उस समय हृदयवल्लभ को वक्षःस्थल चीरकर हृदय के भीतर भरकर रखने पर भी प्यास नही बुझती। भगवान् के साथ हृदय से हृदय मिलाकर मुँह से मुँह मिलाकर रहना क्या है, इसको क्या हम कुछ समझ सकते हैं? इसी भाव क आवेश में विभोर होकर विल्वमङ्गल ने कहा — 'इस विभु का शरीर मधुर है, मुखमण्डल मधुर है, मधुर है, मधुर है, अहो! मृदु हास्य मधुगन्धयुक्त है, मधुर है, मधुर है, मधुर है!' *

(साभार अनंत सदेश)

सूचना :

हमें पता चला कि कुछ लोग श्री भगवान बालाजी के नाम पर असंभव घटनाओं को तथा झूठी कहानियों को छपवाकर भक्तजनों को बांटकर धोखे दे रहे हैं। अतः आप लोगों से हमारी प्रार्थना है कि कृपया ऐसी बातों पर विश्वास मत कीजिए।

ति. ति. देवस्थान,
तिरुपति

(पृष्ठ ९ का शेष)

यह तिलक कब कैसे धारण करना चाहिये इस जिज्ञासा के समाधानार्थ कहते हैं—

स्नात्वा विधानतः पूर्वमूर्ध्वपुड्र धारण करे वैष्णवजन श्वेत मृत्तिका से उसके अभाव में चन्दन तिलक लगाये। मृत्तिका पर विशेष आग्रह इसलिये है – कि श्रीवैष्णवजन मुमुक्षु होते हैं। सात्विक होते हैं। मृत्तिका में भूदेवी का निवास है श्वेत वर्ण विष्णु को प्रिय है 'शुक्लाम्बरधर विष्णुं शशिवर्णं' यह सत्व ज्ञान वर्धक है। चन्दन राजस है, कस्तूरी भी राजस है।

चन्दन प्राणिगन्धञ्च श्रीपत्रमगुरुन्तथा।
राजसं द्रव्यमेवैतद् वदन्ति ब्रह्मवादिन.॥

राजस द्रव्यो के सम्पर्क से राजसीय भाव का होना स्वाभाविक है। 'सत्वात्संजायते ज्ञानं रजसो लोभ एव च' गीता जी में सत्व को ज्ञानोत्पादक एव रज को लोभ कारक बताया है। वैष्णव जनो को लोभ भी सात्विक ग्राह्य है। जैसे भगवत् प्रसादी तुलसी पुष्प चन्दन प्रसाद प्राप्ति का लोभ, वैष्णवाराधन के लिये लोभ ग्राह्य है। इसलिये सात्विक मृत्तिका का तिलक वैष्णव करते है। 'सात्विकाः पञ्च मृत्तिकाः, पाँच मृत्तिकायें सात्विक है 'मुक्तिदा पञ्च मुच्चैव, सात्विक मृत्तिका मुक्ति देने वाली है क्योंकि यह उद्धृतासि वराहेण, भूदेवी को श्री वराह भगवान ने धारण किया, प्रतिष्ठित भी किया। हरि को अत्यन्त अभिमत होने से भूदेवी सबको मान्य है। नास्तिक भी अपनी जन्मदातृ भू पर स्वाभिमान करते हैं। इसी श्रेष्ठता को ध्यान कर—

अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे।
मृत्तिके हर मे पाप सर्वपापहरा भव॥

वैष्णव जन मन्त्र से प्रार्थना करते है। 'तस्माच्छ्रेष्ठतरा तु मृत् अतएव मृत्तिका से ऊर्ध्वपुण्ड्र करना श्रेष्ठ है।

यह मृत्तिका कहाँ से ग्रहण करनी चाहिये इस प्रश्न के उत्तर में कहा गया कि 'पर्वताग्रे नदीतीरे.. मम क्षेत्रे विशेषतः।' हरि क्षेत्र की मृत्तिका श्रेष्ठ बताई है। इसी कारण श्रीरङ्गम् श्रीपुष्कर श्रीवेंकटाद्रि श्रीचित्रकूट श्रीवृन्दावन की मृत्तिका ग्रहण का विधान है। इनके अभाव में तुलसीमूलमाश्रिते' तुलसी के मूल की मृत्तिका का ग्रहण है। 'वज्यश्चान्यत्र मृत्तिका' अन्य स्थान की मृत्तिका न लेनी चाहिये। सर्व सुलभ भगवान को अतिप्रिय क्योकि प्रभु अति दयालु स्वभाव के हैं। इसीलिये कहा कि—

'मूले कृष्णतुलस्या यत्तन्मेऽतीव प्रिय भवेत्।' भगवान विष्णु तुलसी प्रिय है। तुलसी में वैद्युत् शक्ति, स्फुरण एव जीवनी शक्ति विद्यमान है अतएव परम सात्विक वातावरण प्रदान करने वाली है।

ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण में श्वेत मृत्तिका स्थान विशेष की ग्राह्य—

स्वेता प्रधानतो ग्राह्या ऊर्ध्वपुण्ड्रस्य धारणे।
सा च स्थानबिशेषेण विशेषफलदा भवेत्॥

किस किस प्रकार के फल देने वाली है–कहते हैं—

श्यामं शान्तिकरं पीतं पुष्टिदा रक्तमृत्तिका।
वश्य श्वेत तथा पुण्य मोक्षदं मुनिसत्तम॥

श्याम मृत्तिका शान्तिप्रद, प्रीत पुष्टिप्रद, रक्त-वश्य कारक, श्वेत मोक्ष देने वाली कही है। इन सबकी मीमासा करने पर यही तथ्य निकलता है कि–

सर्वं श्वेत मृदा कार्यमूर्ध्व पुण्डं यथाविधि।
ऋजूनि सान्तरालानि अङ्गेषु द्वादशस्वपि॥

सर्व फल दातृ श्वेतमृत्तिका ही से ऊर्ध्वपुण्ड्र द्वादश स्थानों पर अंगोमें करना श्रीवैष्णवोको आवश्यक है,

दाहिने हाथ के अगुठे के बाद की तर्जनी अंगुली से तिलक धारण करना चाहिये। कहा है–

दक्षिणस्य तु हस्तस्य अङ्गुल्यः सम्यकीर्तितः।
ऊर्ध्वपुण्ड्रस्य करणे निषिद्धा मध्यमाङ्गुलिः॥

मध्यम अगुली से तिलक न करे। तर्जनी को प्रदेशिनी भी कहते है क्योकि अंगूठे के समीप होने के कारण इसी से तिलक करने से मुक्ति सिद्धि होती है।

अतएव ऊर्ध्वपुण्ड्र श्रीवैष्णवजन, मुमुक्षजन, वेद वेदान्त के पारंगतजन आदि काल से करते चले आये है और आज भी इसी मार्ग के अवलम्बक साधक भगवद् भक्त करते भी हैं। घोर संसारी, नास्तिक बुद्धिजन तो तिलक को देखकर घृणा, द्वेष, उपहास तक करने लगते हैं उनके लिये यह तिलक वह तुला है जिस पर उनका आभिजात्य, सात्विकता आदि गुणों का स्पष्ट संतोलन हो जाता है इसलिये वैष्णवों के द्वारा ऐसे जन सर्वदा उपक्षणीय हैं।

(अनंत सन्देश की सौजन्य से)

हिन्दू धर्म रक्षण सस्था :—

हिन्दू धर्मोद्धार के लिए तथा आर्ष संस्कृति के प्रचार के लिए तिरुमल तिरुपति देवस्थान के सहयोग से "हिन्दू धर्म प्रतिष्ठानम्" नामक सस्था के आविर्भाव होने की बात लोकविदित है। नये आदेशानुसार २८, मई से इसको "हिन्दू धर्म रक्षण सस्था" का नाम रखा गया है। भविष्य में यह संस्था इस नाम से ही धार्मिक प्रचार करेगा। और 'धर्म रक्षण सस्था" नामक शीर्षक में सप्तगिरि में उनके विविध कार्यक्रमो को प्रकाशित किया जायगा।

प्रचारक की नियुक्ति —

हिन्दू धर्म के प्रचार के लिए देवस्थान ने श्री वंगल पट्टाभि भागवतार की नियुक्ति की। हिन्दू धर्म रक्षण सस्था के नेतृत्व में देश के विविध प्रातो में ये प्रचार करेंगे। हिन्दू धर्म

रक्षण संस्था, विजयवाडा शाखा के आध्वर्य में श्री भागवतारजी ने २१, जुलै को पूर्णानंदम पेट के श्री दासाजनेय स्वामी के मदिर में तथा २४, जूलै को सत्यनारायणपुरम के कल्याण मंडप में "श्रीनिवास कल्याण" नामक हरिकथा का सुमधुर गान किया।

अजायबघरों के बारे में देवस्थान की विज्ञप्ति:—

दस लाख रुपयो के खर्च से तिरुपति व तिरुमल में नये अजायबघरो का निर्माण जलदी से हो रहा है। यहाँ प्रदर्शन में रखने वाले वस्तुओ को देश के चारो कोनो से व्यक्तियो तथा संस्थाओ से इकट्ठा कर रहे है। हाल ही में तिरुपति के श्री वेकटेश्वर विश्व विद्यालय ने अपने यहाँ के २५० शिला मूर्तियो को भेंट किया। ऐसे ही अपने यहाँ के पुरातन तथा मशहूर वस्तुएँ, शिला मूर्तियो, चित्र, आदि को भेंट करने के लिए देवस्थान के कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री पी० वी० आर० के० प्रसाद जी ने सभी व्यक्तियो तथा सस्थाओं को विज्ञप्ति की।

शिशु स्वास्थ्य रक्षा प्रणाली :—

अंतर्जातीय शिशुस्वास्थ्य वर्ष के संदर्भ में देवस्थान ने तिरुमल तथा तिरुपति मे बच्चो के स्वास्थ्य रक्षा के कार्यक्रम को ले लिया। बच्चो में साधारणतः दिखायी देनेवाले स्पर्श सचारक रोग, उसके निवारण के लिए माता छापने तथा बच्चो में बहिरापन आदि की परीक्षा करके उसके निवारण करना, जन्म लेते समय आनेवाली बीमारियाँ तथा कुष्ठरोग, चर्म व्याधियाँ आदि को निवारण करने के लिए प्रयत्नशील है।

श्री वेकटेश्वर रामनारायण रूया अस्पताल के निपुण डाक्टरो के अध्वर्य में इस कार्यक्रम का निर्वहण हो रहा है। ४, अगस्त से शुरु की गयी इस कार्यक्रम को देवस्थान के सीनियर मेडिकल आफिसर डा० वे आर धनलक्ष्मी जी समन्वयाधिकारी के रूप में काम कर रही है।

सिर्फ देवस्थान के कर्मचारियो के बच्चो को ही प्रदर्शन में शामिल होने की अनुमति मिलती है।

नूतन अतिथि गृह :—

तिरुमल में "पद्मावती अतिथि गृह" तथा "हिल व्यू अतिथि गृह" नामक दो अतिथि गृहो का निर्माण किया गया है। आन्ध्र प्रदेश के माननीय देवादाय शाखा मत्री श्री पी० वी० चौदरी जी ने २२, अगस्त को इन भवनो का उद्घाटन किया। ति. ति देवस्थान के निर्वाहक मण्डलि के अध्यक्ष डा० एन० रमेशन, कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री पी० वी० आर० के० प्रसाद जी तथा अन्य देवस्थान के अधिकारी और प्रमुख नगरवासियो ने इस कार्यक्रम में भाग लिये।

पद्मावती अतिथिगृह सिर्फ राष्ट्रपति, प्रधान मत्री, राज्यपाल, मुख्यमंत्री आदि प्रमुख व्यक्तियो के आवास के लिए दिया जाता है।

हिन्दू धर्म रक्षण संस्था के आध्वर्य में विविध शाखाओं के कार्यक्रम

गुंटूर जिला :—

यहाँ इस शाखा का आरम्भ १९७८ में हुआ है। जिला शाखा के निर्वाहक श्री हरिकिषन राव के नेतृत्व में कई कार्यक्रम जोर से चलाया गया है। हिन्दू धर्म की महत्ता के बारे में भाषण, भक्ति प्रधान विषयों के एक पात्राभिनय आदि संस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुए है। इसके अलावा अन्नमाचार्य की कीर्तनाओ के गान रसज्ञ हृदयों को आकर्षित किया। बाद में श्री धूलिपाल अर्कसोमयाजलु जी के भाषण आदि कार्यक्रम हुए। सबसे बढकर मई महीने गुंटूर में रखे गये औद्योगिक वस्तु प्रदर्शन में इस संस्था के आध्वर्य में श्री बालाजी के मदिर की नमूना, वहाँ धार्मिक ग्रंथ विक्रय बहुत जनाकर्षक हुए। ४० दिन के इस प्रदर्शन में देवस्थान के द्वारा चलनचित्रो का प्रदर्शन, अन्नमाचार्य हरि कथा गान आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुए। इसके अलावा, हरिजन के आवास प्रातो में सेवा कार्यक्रम, भजन, हरिकथा गान, और कई ऐसे भारतीय संस्कृति के प्रचारक कार्यक्रम मनाये गये है।

कृष्णा और खम्मं जिला:—

उन जिलाओ के निर्वाहक सर्वश्री बसवराजु सुब्बाराव, जोस्युल राधाकृष्ण मूर्ति ने वहाँ हर प्रात व प्रदेश को जाकर हिन्दू धर्म के बारे में प्रचार किये। कृष्णा जिले के हसल दीवी में तूफान पीडित लोगो के लिए बनाये गये घरों का उद्घाटन के समय श्री बालाजी के चित्रपट तथा प्रसाद को बाँटे थे। हरिजन के आवास प्रातो में कई कार्यक्रम किये थे। हमारे त्यौहारो के बारे में छोटी छोटी पुस्तको को छपवाकर बाँट दिये।

पश्चिम गोदावरी जिला :—

इस जिले के निर्वाहक महापण्डित श्री कल्लूरि सुब्रह्मण्य दीक्षितुलु है। सस्कृतांध्र भाषाओ में पडित तथा अखण्ड प्रज्ञानिधि श्री दीक्षितुलुजी ने भागवत सप्ताह को जनरंजक रूप में निर्वहण किया। इस जिले के कई प्रांतो में जाकर धार्मिक कार्यक्रमों को चला रहे है।

पूर्व गोदावरी जिला :

स्थानीय निर्वाहक श्री वेपटि कृष्णमूर्तिजी न केवल कई कार्यक्रमो को दिये, बल्कि भजन संघो को चलाते हुए भजन तथा हरिकथा गान कर रहे हैं। गोदावरी नदी के पुष्करो के कार्यक्रमो में इनको प्रमुख प्रातिनिध्य है।

विशाखपट्टण :

इस जिले के निर्वाहक श्री एम्. वी सीतारामय्या को विश्व हिन्दू परिषद् से लगाव होने के कारण धर्म प्रचार कार्यक्रम को विजयपूण

(शेष पृष्ठ ४० पर)

ति. ति. देवस्थान की निर्वाहक मण्डलि के प्रमुख निर्णय

हैदराबाद में कचि कामकोटि पीठाधिपति से निर्वहण किये जानेवाले वेदगान परिषद, वेदभाष्य, आहिताग्नि सदस्सु के लिए रु ३०,००० की आर्थिक सहायता देने का निर्णय लिया गया।

श्री बालाजी के प्रसाद को हवाई जहाज में ले जाकर मद्रास, हैदराबाद, बेंगुलूर में विक्रय करने का निर्णय लिया गया। कौन सा प्रसाद ले जाना है और परिवहन आदि खर्चों को मिलाकर कितना मूल्य रखना और इस प्रणाली को जल्दी से प्रारम्भ करने के लिए देवस्थान के कार्यनिर्वहणाधिकारी को सुझाव दिया गया।

देवस्थान के इंजनीरिंग विभाग में ४ सहायक स्थपतियों को नियमित करने का निर्णय लिया गया।

अब के हरिकथा शिक्षणा में मिलाकर अन्नमाचार्य की कीर्तनाओ की शिक्षणा देने का निर्णय लिया गया। सरकारी सगीत कला-शाला के शिक्षकों को प्रत्येक उपहार रु. ७५ तथा छात्रों को छात्रवृत्ति रु. ७५ देने के बारे में कार्यनिर्वहणाधिकारी को सुझाव दिया गया।

नेल्लूर शहर के पवर पेट में स्थित श्री उड़यवल्लु सन्निधि को माइक सेट देने का निर्णय लिया गया।

अनतपुरम् स्थित श्री बालाजी के मन्दिर के लिए शिला मूर्तियों को दान देने का निर्णय लिया गया।

देवस्थान के द्वारा निर्मित श्री वेंकटेश्वर वैभव (तेलुगु चित्र) को आन्ध्रप्रदेश में प्रदर्शन करने के लिए समाचार तथा पौर सम्बन्धियों के डायरेक्टर जनरल को देकर, फायदे में उचित हिस्से लेने का निर्णय लिया गया।

तिरुमल में नूतन "पद्मावती अतिथि गृह" का उद्घाटन करते हुए आन्ध्रप्रदेश के माननीय देवादाय शाखा मन्त्री श्री पी वी चौदरी जी को चित्र में देख सकते हैं।

रु ६० के टिकेट पर भक्तों को अनुमति प्राप्त आर्जित पूलंगि सेवा को रद्द करने का निर्णय लिया गया।

फासी की सजे डाले गये खैदियों को दो लड्डू, एक वडा, कलकण्डा की एक पोटली, महाप्रसाद की दो पोटलियों को जाति मत भेद के बिना बाँट देने का निर्णय लिया गया। पहले पहल आन्ध्रप्रदेश, तमिल नाडु, कर्नाटक के विविध कारागारों से समाचार ग्रहण कर। फांसी के तख्तपर चढने के एक दिन के पहले देने का निर्णय लिया गया।

अस्पताल में तीव्र व्याधिग्रग्रस्त रोगियों को महाप्रसाद के पोटलियों को देने का निर्णय लिया गया। इस वास्ते देवस्थान के कर्मचारियो को अपने निवास के निकट के अस्पतालों से समय समय पर जाकर समाचार लेना और इसके अलावा अस्पताल के मागने पर डाक के द्वारा भेजने की व्यवस्था करना और इस प्रणाली के बारे में विस्तृत प्रचार करने का निर्णय लिया गया।

हर ४० वर्ष को एक बार भूमि पर दर्शन देने के लिए लाकर, अब दर्शन देने वाले श्री कचि वरदराज स्वमीजी को "मेल्चत्" समर्पण करने का निर्णय लिया गया।

मासिक राशिफल

सितंबर १९७९

* डा० डी. अर्कसोमयाजी, तिरुपति.

मेष
(अश्विनी, भरणी, कृत्तिका केवल पाद–१)

राहु के द्वारा आदोलन। शनि के द्वारा धन हानि या झगडे या सतान से अलगाव, गुरु के द्वारा धन प्राप्ति, नूतन वस्त्र, शृगार या वाहन प्राप्ति या सतान प्राप्ति। कुज के द्वारा २४ तक सतान के कारण या अक्रम पद्धति के कारण धन प्राप्ति, बाद को उदर पीडा या बुखार या बुरे मित्रो के कारण अशाति। रवि के द्वारा २७ तक शत्रुओ के कारण या अस्वस्थता के कारण आदोलन, बाद को स्वस्थता, शत्रुओ पर विजय। शुक्र के द्वारा १२ तक बडो की प्रशसा, रिश्तेदारो का आगमन या धन प्राप्ति या सतान प्राप्ति, बाद को अपमान व अस्वस्थता। बुध के द्वारा १५ तक पत्नी से या सतान से झगडे, बाद को ऊचे पद या विजय।

वृषभ
(कृत्तिका पाद-२, ३, ४, रोहिणी, मृगशिरा पाद-१,२)

राहु के द्वारा झगडे। शनि के द्वारा धन हानि, मित्रो व रिश्तेदारो से अलगाव। कुज क द्वारा १४ तक नौकरी में आदोलन या झगडे या शत्रुओ के कारण या घर में चोरी के कारण या अस्वस्थता के कारण आदोलन, बाद को सतान के कारण या अक्रम पद्धति से धन प्राप्ति। रवि के द्वारा अस्वस्थता या शत्रु। बुध के द्वारा १५ तक घर मे सपत्ति, बाद को पत्नी या सतान से झगडे। शुक्र के द्वारा अच्छे मित्र प्राप्ति, रिश्तेदारो का आगमन, बडो की प्रशसा, धन प्राप्ति या सतान प्राप्ति। गुरु के द्वारा रिश्तेदारो के कारण आदोलन।

मिथुन
(मृगशिरा पाद-३ ४, आर्द्रा, पुनर्वसु पाद-१,२,३)

राहु के द्वारा धन प्राप्ति। शनि के द्वारा धन प्राप्ति, स्वस्थता या वाहन प्राप्ति। शुक्र के द्वारा धन प्राप्ति या नूतन वस्त्र प्राप्ति या शत्रुओ पर विजय या अच्छे मित्रो की प्राप्ति। गुरु के द्वारा निराशा। रवि के द्वारा २७ तक धन प्राप्ति, अधिकार प्राप्ति, बाद को अस्वस्थता। बुध के द्वारा २५ तक अच्छे मित्र प्राप्ति, अपने बुरे प्रवर्तन के कारण डर, बाद को घर मे सपत्ति। कुज के द्वारा नौकरी में या शत्रुओ के कारण या घर मे चोरी के कारण या अस्वस्थता के कारण आदोलन।

कर्काटक
(पुनर्वसु पाद-४, पुष्य तथा आश्लेष)

शनि तथा राहु के द्वारा धनहानि। गुरु के द्वारा धन वृद्धि। कुज के द्वारा धनहानि या आदोलन। शुक्र के द्वारा धन प्राप्ति या नूतन वस्त्र, गौरव प्राप्ति। बुध के द्वारा धन प्राप्ति, अच्छे मित्र प्राप्ति या अगौरव। रवि के द्वारा २७ तक धन हानि नेत्र पीडा, दूसरो से धोखा खाना, बाद को धन प्राप्ति व गौरव।

सिंह
(उत्तर फल्गुनि पाद-१, मख, पूर्व फल्गुनि)

राहु के द्वारा आंदोलन। शनि के द्वारा रिश्तेदारो से अलगाव, प्रयाण व प्रयास या धन हानि या सतान के कारण झगडे। गुरु के द्वारा धन हानि या झगडे। शुक्र के द्वारा २२ तक शृगार व प्रेम सुख, बाद को धन प्राप्ति या नूतन वस्त्र प्राप्ति या गौरव। बुध के द्वारा १५ तक बुरे मित्रो के कारण धन हानि, बाद को अपमान, धन प्राप्ति। कुज के द्वारा १४ तक अत्यत धन प्राप्ति, बाद को धन हानि। शनि के द्वारा १७ तक धन हानि, उदर पीडा, बाद को धन हानि या नेत्र पीडा या दूसरो से धोखा खाना।

कन्या
(उत्तरा पाद २,३,४, हस्त चित्त पाद-१, २)

राहु के द्वारा धन हानि। शनि के द्वारा आदोलन। गुरू के द्वारा प्रयाण व प्रयास। शुक्र के द्वारा १२ तक स्तब्धता, बाद को शृगार व सुख। बुध के द्वारा १५ तक अगौरव या अस्वस्थता, बाद को बुरे सलाह के कारण झगडे। कुज के द्वारा धन प्राप्ति, सभी प्रकार से विजय। रवि के द्वारा १७ तक स्तब्धता, बाद को धन हानि, उदर पीडा, प्रयाण।

तुला
(चित्त पाद-३, ४, स्वाति, विशाख पाद-१, २, ३)

राहु के द्वारा धन प्राप्ति। शनि के द्वारा आदोलन। गुरु के द्वारा अधिक धन प्राप्ति। शुक्र के द्वारा ११ तक धन प्राप्ति, अच्छे मित्रो की प्राप्ति, बाद को नूतन वस्त्र प्राप्ति। बुध के द्वारा १५ तक धन प्राप्ति, मित्रो की प्राप्ति, शृगार, वाहन प्राप्ति, सतान प्राप्ति, बाद को अस्वस्थता या अपमान। कुज के द्वारा १४ तक अगौरव या धन हानि, बाद को अधिक धन प्राप्ति। रवि के द्वारा १७ तक धन प्राप्ति, विजय, स्वस्थता, बाद को स्तब्ध।

वृश्चिक
(विशाख पाद-४, अनुराधा, ज्येष्ठ)

राहु के द्वारा झगडे। शनि के द्वारा धन हानि या अपमान। गुरु के द्वारा धन हानि या गौरव भग। कुज के द्वारा महीने के अत तक धन हानि व गौरव भग। बुध के द्वारा महीने के अत तक धन प्राप्ति, विजय, शृगार, अच्छे मित्र, वाहन प्राप्ति या नये घर की प्राप्ति। शुक्र के द्वारा २२ तक झगडे, अपमान, बाद को अच्छे मित्र व धनप्राप्ति। रवि के द्वारा विजय, धन प्राप्ति।

धनुः
(मूल, पूर्वाषाढ, उत्तराषाढ पाद-१)

राहु के द्वारा पापकार्य। शनि के द्वारा झगडे या अस्वस्थता या अधार्मिक प्रवर्तन। गुरु के द्वारा धन प्राप्ति, विजय, सतान प्राप्ति। कुज के द्वारा पत्नी को असतोष, नेत्र या उदर पीडा या धन हानि या गौरव भग। रवि के द्वारा २७ तक धन हानि या गौरव भग, बाद को विजय या धन प्राप्ति। शुक्र के द्वारा १२ तक धन प्राप्ति या श्रृगार या नूतन वस्त्र प्राप्ति, पुण्य कार्य, बाद को झगडे व अपमान। बुध के द्वारा १५ तक प्रयत्नो में विफलता, बाद को धन प्राप्ति, श्रृगर या नूतन गृह प्राप्ति।

मकर
(उत्तराषाढ पाद-२, ३, ४. श्रवण, धनिष्ठ पाद-१, २)

राहु के द्वारा आदोलन। शनि के द्वारा रिश्तेदारो से अलगाव। गुरु के द्वारा अस्वस्थता, प्रयाण व प्रयास। कुज के द्वारा १४ तक धन प्राप्ति, विजय, बाद को पत्नी को असतोष या नेत्र या उदर पीडा। शुक्र के द्वारा धन प्राप्ति, नूतन वस्त्र प्राप्ति या शृगार या नूतन गृह प्राप्ति, धार्मिक प्रवर्तन। रवि के द्वारा अस्वस्थता या पत्नी को असतोष, प्रयत्नो में विफलता, धन हानि व गौरव भग। बुध के द्वारा १५ तक धन प्राप्ति, नूतन वस्त्र, विजय या सतान प्राप्ति, बाद को निराशा।

कुंभ
(धनिष्ठ पाद-३,४, शतभिष, पूर्वाभाद्रा पाद-१, २, ३.)

राहु के द्वारा झगडे। शनि के द्वारा प्रयाण। गुरु के द्वारा धन प्राप्ति या श्रृगार व प्रेम। कुज के द्वारा १४ तक अस्वस्थता या शत्रुओ के कारण डर या सतान के कारण आदोलन, बाद को धन व विजय प्राप्ति। रवि के द्वारा १७ तक प्रयाण, उदर पीडा, बाद को अस्वस्थता, पत्नी को असतोष। शुक्र के द्वारा १२ तक स्त्री के कारण झगडे, बाद को धन प्राप्ति या शृगार या नूतन वस्त्र प्राप्ति या नूतन गृह प्राप्ति। बुध के द्वारा १५ तक झगडे, बाद को धन प्राप्ति, विजय, नूतन वस्त्र या संतान प्राप्ति।

मीन
(पूर्वाभाद्र पाद-४, उत्तराभाद्र, रेवती)

राहु के द्वारा धन प्राप्ति। शनि के द्वारा स्वस्थता व विजय। गुरु के द्वारा मानसिक अशाति। कुज के द्वारा बुखार, उदर पीडा या बुरे मित्रो के कारण या शत्रुओ के कारण या सतान के कारण आदोलन। शुक्र के द्वारा अपमान, अस्वस्थता, स्त्री के कारण आदोलन। रवि के द्वारा १७ तक विजय, स्वस्थता, बाद को प्रयाण। बुध के द्वारा १५ तक विजय व अधिकार प्राप्ति, बाद को झगडे।

(पृष्ठ ३७ का शेष)

बना रहे है। तूफान पीडित प्रदेश अचल वीवि में कई कार्यक्रमो के निर्वहण के अलावा, तिरुपति में मनायी गयी गर्मी के शिक्षण शिबिर को सफलता से निर्वहण केलिए कई प्रयास उठाये।

चित्तूर जिला

इस जिले के निर्वाहक श्री कृष्णाजी ने सुदूर प्रांतो के ग्राम - ग्रामो को जाकर धर्म प्रचार कर रहे है। तिरुपति में निर्वहण की गयी गर्मी के शिक्षण शिबिर में इनका कार्य भी प्रशसनीय है।

बेंगुळर :

श्री प्रजावर स्वामीजी के शिष्य श्री कोदडरामय्याजी घर - घर व प्रांत - प्रांत को जाकर धर्म प्रचार करते हुए, भजन, हरिकथा गान, भाषणादि कार्यक्रमों को निर्वहण कर रहे है।

Edited and Published on behalf of the T. T. Devasthanams by K. Subba Rao, M.A. and Printed at T. T. D. Press, By M. Vijayakumar Reddy, Manager T. T. D. Press, Tirupati

कचि को पहुँचे। वहाँ मंदिर के पास सभी प्रकार के लांछनों से, उन वस्त्रों का स्वागत किया गया। बाद में श्री प्रसाद जी के साथ अधिकारी, अर्चकगण श्री अत्ति वरदु को संदर्शन करके, तीर्थ प्रसाद को स्वीकार करके, स्वामीजी को वस्त्र समर्पित किये।

बाद में अनौपचारिक समावेश में कंचि देवस्थान की ओर से कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री सुब्रह्मण्यन् ने
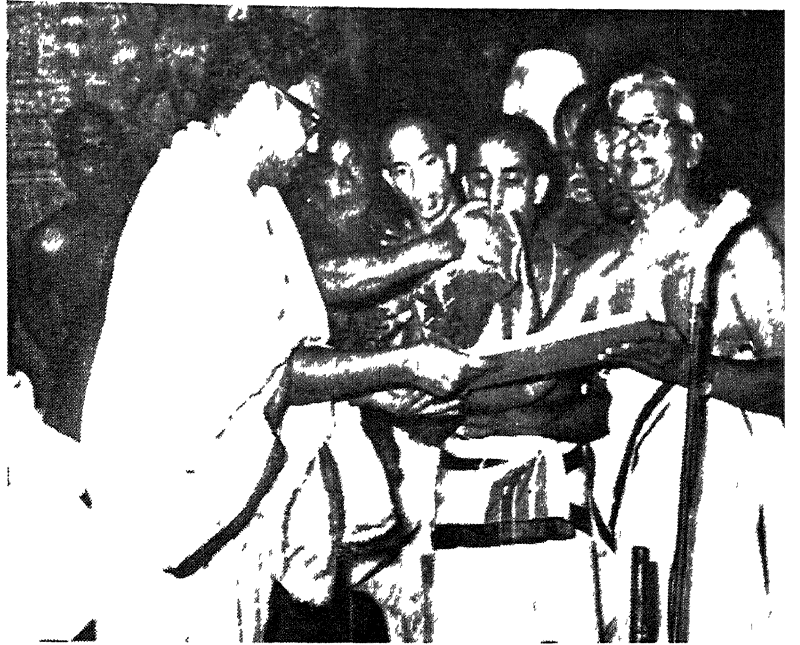
लांछन सहित ति. ति. देवस्थान को दो छत्रों का पुरस्कार दिया। ति ति देवस्थान के कार्यनिर्वहणाधिकारी ने भाषण देते हुए कंचि में अपनी एक धर्म शाला एक समाचार केंद्र को निर्माण करने की योजना के बारे में बता दिया। ति. ति. देवस्थान के अधिकारी बृंद को सगौरव पूर्वक शहर के हद तक ले जाकर छोड दिया गया।

तिरुमल यात्रियों को सुविधाएँ

* * * * *

* सभी तरह के लोगों को रहने के लिए मुफ्त में दी जानेवाली धर्मशालाएं या उचित दरों पर मिलनेवाले काटेजस का प्रबध ।

* श्री बालाजी के दर्शन के लिए जानेवाले यात्रियों के क्यू षेड्स में हवा तथा प्रकाशमान सुविशाल कमरों का प्रबध ।

* क्यू षेड्स में ही काफी बोर्ड के द्वारा नास्ता का प्रबध ।

* उचित दरों पर दही-भात के पोटलियों का विक्रय ।

* यात्रियों को विना बाहर आये ही, क्यू षेड्स के पास ही सण्डास का प्रबंध ।

* आंध्र प्रदेश सरकार के डेयरी डवलपमेंट कार्पोरेशन के द्वारा शुद्ध दूध आदि का विक्रय ।

* यात्रियों को पढने के लिए देवस्थान से प्रकाशित ग्रंथ तथा भगवान बालाजी व पद्मावती देवी के चित्रपटों का विक्रय ।

* यात्रियों को मनोरंजन तथा विश्राम के वास्ते टेलिविजन का प्रदर्शन व संगीत का प्रसार ।

* क्यू लाईन में तथा तिरुमल को पैदल जाने के रास्ते में ७ वीं मील पर चिकित्सा की सुविधा ।

* सामान व चप्पल को रखने के लिए विशेष सुविधाएँ ।

* तिरुमल के सेन्ट्रल रिसेप्षन आफिस से अन्य प्रांतों को आटो रिक्शा (Auto Rickshaw) की सुविधा ।

* तिरुमल को पैदल जानेवाले यात्रियों के सामान को तिरुमल तक पहुँचाने का प्रबध ।

* धोखेबाज या दलालों से रक्षा करने के लिए पेष्कार के ओहदे पर अधिकारी की मुखद्वार पर नियुक्ति ।

* क्यू षेड्स के यात्रियों की शिकायतों की जाँच - पडताल करने को तथा आवश्यक सुविधाओं को इन्तजाम करने के लिए पेष्कार के ओहदे पर अधिकारी तथा कर्मचारियों की नियुक्ति ।

* देवस्थान से दी जानेवाली ऐसी अन्य बहुत सुविधाएँ है ।

सूचना :— तिरुमल में दि २—४—७९ से डाकघर रात को ८—३० बजे तक काम करती है । इसके अलावा मुख्य डाकघर रात के १०—३० से २—०० बजे तक काम करती है । अगर चाहें तो श्री बालाजी के भक्त अन्नमाचार्य के डाक-मुहर अपने कार्ड या कवरों पर छपवा सकते हैं ।